डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2021- 23
ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 24 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | बुधवार 01 नवम्बर 2023 | मूल्य 2 रुपया

सात लोगों को थाने में देना होगी उपस्थिति

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री दिलीप कुमार यादव द्वारा राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 03 (1) के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए सात लोगो को माह के 1 व 16 तारीख को संबंधित थाने में उपस्थित होने का आदेश दिया है।

इनमें लक्ष्मण उर्फ बाणिया पिता सत्यनारायण बावरी निवासी आक्या पालरा, इंदरसिंह पिता गौरीलाल बंजारा निवासी खडावदा, जमनालाल पिता रामविलास राठौर निवासी बुढा, सादिक उर्फ सिद्दीक पिता कल्लनखां मेवाती निवासी नयापुरा, आदिल पिता बशीर मोहम्मद मंसूरी निवासी खटीक मोहल्लान भानपुरा, जाफर पिता मुबारिक टांडिया मुसलमान निवासी मुल्तानपुरा एवं इमरान उर्फ सोनी पिता सलीम खान निवासी खानपुरा शामिल है। कलेक्टर श्री यादव ने आदेशित किया है कि ये तीन माह तक प्रति माह की 1 एवं 16 तारीख को संबंधित पुलिस थाना में उपस्थिति देकर यह सुनिश्चित कराये की वे किसी भी प्रकार की आपराधिक गतिविधियों में संलग्न नहीं है।

इस बार सबसे ज्यादा उम्मीद्वार मैदान में ...

पिछली बार 30 ने लड़ा था चुनाव

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। सोमवार को नामांकन का आखरी दिन रहा। अंतिम दिन दोनो प्रमुख दलों के प्रत्याशियों ने जोर दिखाया तो रूठो ने भी हुंकार भरी। वहीं समाजिक स्थिति देख कई निर्दलीय ने भी किस्मत आजमाने के लिए नॉमिनेशन जमा किया है। जिले की चार विधानसभाओं में कुल 39 प्रत्याशियों ने नामांकन जमा किया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अभी तक हुए 14 चुनावों में सबसे ज्यादा उम्मीद्वार इस बार मैदान में है। हालांकि अभी फार्म उठाने की तारीख बाकी है। लेकिन सबसे ज्यादा उम्मीद्वार 2018 के चुनाव में अपना भाग्य आजमाने उतरे थे। पिछले चुनाव में उम्मीद्वारों की संख्या 30 थी। इधर महत्वपूर्ण बात यह है कि मल्हारगढ़ में अभी तक हुए 11 चुनावों में दो बार ही कोई निर्दलीय उम्मीद्वार मैदान में उतरा है। यह तीसरा मौका है कि यहां कोई निर्दलीय मैदान में होगा। वहीं संभवत: यह पहला मौका होगा जहां त्रिकोणीय मुकाबला देखने को मिल सकता है।

मंदसौर में 10 से ज्यादा कभी नहीं उतरे मैदान में...

मंदसौर विधानसभा क्षेत्र में अभी 10 उम्मीदवार चुनावी मैदान में है। यहां भाजपा के यशपाल सिंह सिसौदिया और कांग्रेस के विपिन जैन के बीच सीधी टक्कर है। मुस्लिम वोट साधने निर्दलीय प्रत्याशी इस्माइल मेव व बसपा की सुनीता कैलाश गर्ग भी मैदान में है। यह दूसरा मौका है जब 10 प्रत्याशी मैदान में है। इससे ज्यादा प्रत्याशी यहां कभी नहीं उतरे। इसके पहले 1993 में 10 प्रत्याशी मैदान में थे।

मल्हारगढ़ विधानसभा में सात प्रत्याशी...

मल्हारगढ़ विधासभा में कुल 7 उम्मीदवारो ने नॉमिनेशन फॉर्म जमा किया है। इसके पहले 1967 से अभी तक सिर्फ दो बार 2008 और 2018 में कोई निर्दलीय उम्मीद्वार मैदान में था। पिछली बार 7 उम्मीद्वारों ने अपना भाग्य आजमाया था। इस बार इस सीट पर त्रिकोणीय मुकाबला हो सकता है। यहां भाजपा के जगदीश देवड़ा, कांग्रेस के परशुराम सिसौदिया और कांग्रेस से बागी हुए निर्दलीय श्यामलाल जोकचंद के बीच त्रिकोणीय मुकाबला होने की संभावना है। वही भाजपा के बागी बसंतीलाल मालवीय भी निर्दलीय नॉमिनेशन कर चुके है। यहां बसपा के नरेंद्र मालवीय भी मैदान में है।

सुवासरा विधानसभा में 14 उम्मीदवार...

सुवासरा में 2018 के चुनाव में सबसे ज्यादा आठ उम्मीद्वार मैदान में थे। इसके पहले 5 से अधिक निर्दलीय यहां चुनाव लड़ने नहीं उतरे। सुवासरा सीट पर अंतिम दिन तक 14 प्रत्याशियों ने नॉमिनेशन जमा किए है। विधानसभा से भाजपा के हरदीप सिंह डंग और कांग्रेस के राकेश पाटीदार के बीच सीधा मुकाबला है। वही बसपा के बलवंत सिंह गुर्जर और आजाद समाज पार्टी के प्रिंस सूर्यवंशी मैदान में है।

मल्हारगढ़ में तीसरी बार निर्दलीय मैदान में

गरोठ विधानसभा में आठ प्रत्याशी...

गरोठ में भी पिछले विस चुनाव में सबसे ज्यादा 9 उम्मीद्वार मैदान में थे। इसके पहले 7 से अधिक मैदान में नही उतरे। इस बार गरोठ सीट नामांकन के अंतिम दिन तक कुल 8 उम्मीदवारों ने नामांकन फॉर्म जमा किया है। इस सीट पर भाजपा के चंदरसिंह सिसौदिया और कांग्रेस के सुभाष कुमार सोजतिया के बीच सीधा मुकाबला होगा। यहां बसपा के जगदीश रंगोट भी मैदान में है।

अब तक 146...

जिले के विधानसभा चुनावी इतिहास को देखा जाए तो मतदाताओं ने निर्दलियों को एक बार भी तवज्जो नहीं दी। वर्ष 1951 से 2018 तक कुल 146 निर्दलीय मैदान में उतरे हैं और इनमें से महज 5 ही कुल मतदान के 10 फीसदी से अधिक मत ला पाए हैं। वर्ष 1957 में सीतामऊ विधानसभा में जरूर एक निर्दलीय ने दूसरा स्थान हासिल किया था। इधर बात करें तो सबसे ज्यादा मत 1951 के चुनाव में भानपुरा में एक निर्दलीय लेकर आया था।

सबसे ज्यादा मोहनसिंह ने दम भरा...

अभी तक केवल एक बार 1957 में हुए विधानसभा चुनाव में सीतामऊ विधानसभा में निर्दलीय मोहनसिंह ने 5411 मत प्राप्त किए थे। यह कुल मतदान का 30.53 प्रतिशत था। यह जिले के विधानसभा चुनाव के इतिहास में किसी भी निर्दलीय को मिला सर्वाधिक मत प्रतिशत था। तब कुल मतदाता 46035 थे और इनमें से 17726 ने मतदान किया था। कुल मतदान ही 38.51 प्रतिशत हुआ था। इस चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी भंवरलाल 8338 (47.04 प्रतिशत) मत प्राप्त कर विजयी हुए थे। जनसंघ के श्रीनिवास 2300 (12.98 प्रतिशत) मत प्राप्त कर तीसरे नंबर पर रहे थे। इनके अलावा कोई निर्दलीय कमाल नहीं दिखा पाया।

दो बच्चों की मां का गला घोटा, ससुर को बेवकूफ बनाकर दफना दिया?

अब दलौदा पुलिस ने निकलवाया शव, पोस्टमार्टम कराया

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। शहर से दलौदा जाने वाले फोरलेन रोड पर सोनगरी गांव स्थित है। इस गांव में 28 अक्टूबर को एक महिला फरजाना कि मौत हो गई थी। जिसके बाद पति सहित ससुराल वालों ने बिना मामला बताए, शव दफना दिया था। फरजाना के परिवार वालो ने जब पूछा की इसका इंतकाल कैसे हुआ तो कहा गया की गिर गई थी। जबकि, उसके शव पर गला घोटने और रस्सी के निशान थे।

जानकारी के अनुसार फरजाना का निकाह 10 साल पहले सोनगरी के भूरू पिता शहजाद खा से हुआ था। 28 अक्टूबर को भूरू का फोन फरजाना के पिता जहीर खान के पास गया। वह बोला कि फरजाना चक्कर खाकर गिर गयी है तो हम उसे मंदसौर के बडे अस्पताल ला रहे है। यहां से हम नयाखेडा होते हुए जाएंगे तो मृतक फरजाना के पिता नयाखेडा में उनका इंतजार करने लगे। जब काफी समय तक वो नही आए तो उन्होंने फिर भूरू को फोन किया। भूरू ने कहा कि हम अनुयोग अस्पताल मंदसौर आ गये है। लेकिन, जब जहिर अनुयोग अस्पताल पहुंचकर उन्हें ढूंढा तो वह यहां भी नही मिले। इसके बाद जब उन्होंने वापस फोन लगाया तो भूरू कहता है कि इसको हम घर ले आये है, इसका इंतकाल हो गया है। तब जहीर व उसके घरवाले भूरू के घर सोनगरी जाते है और वहां जाकर पूछते है कि हुआ क्या था, तो कहने लगे कि चक्कर आये थे और गिर गयी थी, जिसके बाद मौत हो गई। मौत को जहीर व उसके घर वालो ने सामान्य माना और बगैर उसका चेहरा देखे उसको दफना दिया।

इस घटना के 2 दिन बाद जब एक वीडियो वायरल हुआ तब मृतक फरजाना के पिता जहीर ने भूरू के घर पहुंचे और उससे पूछा की आखिर मामला क्या था। लेकिन, कोई भी इस मामले पर बोलने को तैयार नही था। जिसके बाद वायरल वीडियो को लेकर जहीर दलौदा थाने पर पहुंचा। वहां जाकर वीडियो बताकर मामले की पडताल करने की मांग की।

जिसके बाद मंगलवार को दलौदा पुलिस ने फरजाना का शव कब्रिस्तान से निकलवाया ओर पोस्टमार्टम करने के लिए पोस्टमार्टम रूम मंदसौर भिजवाया। मृतक फरजाना के पिता का कहना है कि वायरल वीडियो में गले मे चोट के निशान है और उंगलियों के निशान भी दिख रहे है। चोट के निशान से यह अंदाजा लग सकता है कि फांसी लगाई और उंगलियो के निशान से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि गला दबाया। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू की है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद आगे की कार्यवाही की जाएगी। जानकारी के अनुसार मृतक फरजाना के 2 बच्चे है।

कंजरों ने ग्रामीणों के साथ मिलकर की थी ट्रैक्टर लूट की वारदात

लूट के साथ हत्या की धाराओं में किया बदमाशों को गिरफ्तार

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। रविवार शाम नाहरगढ थाना क्षेत्र के ग्राम ऐरा व धाकड पिपलिया के बीच ट्रैक्टर चालक की हत्या कर बदमाश ट्रैक्टर लूटकर ले गए। पुलिस ने इस मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं चार बदमाशो की तलाश है। गिरफ्तार आरोपियों ने कंजरों द्वारा दिए गए लालच में आकर हत्या और लूट की वारदात को अंजाम दिया था।

पुलिस कप्तान अनुराग सुजानिया ने प्रेस से चर्चा करते हुए बताया कि ग्राम ऐरा व धाकड पिपलिया कच्चे रास्ते पर अज्ञात बदमाशों द्वारा ऐरा निवासी ट्रैक्टर चालक भंवरनाथ पर गोली चलाई और ट्रैक्टर लेकर भाग गए। उपचार के दौरान भंवरनाथ की मौत हो गई। एसपी ने बताया कि इस मामले में ईश्वर पिता भगवान सिंह गुर्जर उम्र 19 साल निवासी निपानिया थाना सीतामऊ, अर्जुन पिता दशरथ गुर्जर उम्र 18 साल निवासी ग्राम निपानिया थाना सीतामऊ, तुफानसिंह पिता कचरुसिंह गुर्जर उम्र 19 साल निवासी ग्राम भगौरी थाना शामगढ को गिरफ्तार किया गया है। वहीं विक्रम पिता भुवानसिंह गुर्जर निवासी बांगली थाना शामगढ, राकेश कंजर निवासी मुण्डला राजस्थान, विक्रम कंजर निवासी मुण्डला राजस्थान, सुनिल कंजर निवासी अरनिया राजस्थान की तलाश जारी है। आरोपियों से एक देशी पिस्टल मय जिंदा राउंड और वारदात में प्रयुक्त बाइक जब्त की गई है।

इस तरह हुई कंजरों पर शंका...

सबसे पहले पुलिस ने आपसी रंजिश वाले बिंदु पर काम किया। लेकिन, इसकी कोई तथ्यात्मक जानकारी नहीं मिली। इसके बाद कंजर गैंग पर पुलिस को शंका हुई। लेकिन गांव वालों ने कंजरों की आवाजाही के संबंध में मना कर दिया। पुलिस को भी कोई सुराग नहीं मिला। इधर आरोपियो के ट्रेक्टर ले जाने के सम्भावित स्थानो के कैमरे चैक करने पर ट्रेक्टर बसई तरफ जाता देखा गया। जिससे स्पष्टहुआ कि राजस्थान के कंजर भी इस घटना मे शामिल हो सकते है।

एक लाख में कंजरों के लालच में फंसे...

मुखबीर से मिली जानकारी पर पता चला कि निपानिया के ईश्वर गुर्जर और अर्जुन गुर्जर व उनके साथियों के कंजरों से संपर्क है। इनको हिरासत में लेकर पूछताछ की गई तो पता चला कि ईश्वर गुर्जर विगत एक साल से अपने एक साथी विक्रम गुर्जर के माध्यम से मुण्डला कंजर डेरे के राकेश कंजर व अरनिया डेरे के सुनिल से सम्पर्क में था। उक्त कंजरो द्वारा ट्रेक्टर चौरी कर उन्हें लाकर देने पर एक लाख रुपये देने का लालच दिया था। वारदात करने के लिये हथियार पिस्टल भी उपलब्ध कराये थे।

इस तरह दिया वारदात को अंजाम...

पुलिस कप्तान श्री सुजानिया ने बताया कि ईश्वर गुर्जर, अर्जुन गुर्जर ने ट्रैक्टर चालक पर फायरिंग की। फिर ट्रैक्टर लूटकर अपने साथी तुफान सिंह गुर्जर के साथ ट्रैक्टर ले जाकर विक्रम सिंह गुर्जर के माध्यम से हरीपुरा गाँव के पास मुण्डला कंजर डेरे के राकेश कंजर व अरनिया डेरे के सुनिल व विक्रम कजर को ट्रैक्टर सुपुर्द कर दिया। ट्रैक्टर के लिए मन्दसौर पुलिस की राजस्थान डेरो मे दी गई दबीश से कंजरो द्वारा उन्हें थाना क्षेत्र में छोड दिया गया जो कि उन्हैल पुलिस द्वारा लावारिस अवस्था में जप्त किया गया है।

सुवासरा विधानसभा : नौजवान लिखेंगे नई इबारत...

युवाओं के सपने कौन करेगा साकार..?

राजू सोनी

नाहरगढ़, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। सुवासरा विधानसभा गलियारे में वर्तमान राजनीति पर युवाओं के बीच चल रही चर्चा ने प्रत्याशियो का ध्यान आकर्षित किया। वे राजनीतिज्ञ और राजनेता के बीच के मूलभूत अंतर को लेकर चर्चा कर रहे थे। एक ने विद्धतापूर्वक साफ किया कि भाई, राजनीतिज्ञ यानि पालिटिशियन वह होता है, जो सिर्फ और सिर्फ आने वाले चुनाव के सिलसिले में चिंतन करता है। जबकि, राजनेता यानि स्टेट्समैन वह होता है, जो आगामी चुनाव मात्र नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भले के लिए भी गंभीरतापूर्वक चिंतनरत रहता है। बहरहाल, इस विमर्श से एक बात तो साफ हो गई कि की नई पीढी बेहद समझदार है, वह अपना भला-बुरा बेहतर समझती है। उसी हिसाब से मतदान करती है।

लिहाजा, वक्त का तकाजा यही है कि वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में सक्रिय हस्ताक्षर इस नई पीढ़ी से संवाद स्थापित कर अपनी स्थिति स्पष्टकर दें। विधानसभा के लिए आगामी 17 नवंबर को मतदान होना है। चुनाव का रंग भी गहरा होने लगा है। विभिन्न पार्टियों ने अपने प्रत्याशियों के नामांकन दाखिल कर दिए हैं और प्रचार अभियान जोर पकड़ने लगा है। राजनीतिक दल इस चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाने जा रहे पहली बार मतदाता बने युवाओं तक पहुंचने और उन्हें अपनी ओर खींचने की रणनीतियां बनाने और संदेश देने में व्यस्त हैं। लेकिन, इस चुनाव में युवाओं की भागीदारी बढ़े, यह परम आवश्यक है।

राजनीति में युवाओं की भूमिका कैसी हो, इस पर लोगों की अलग-अलग राय हो सकती है। लेकिन, यह तय है कि युवाओं का मताधिकार का उपयोग करना, लोकतंत्र को मजबूत करने का एक सशक्त माध्यम है। किन्तु, इसके लिए चुनावी मुद्दों में युवाओं के सपनों का प्रदेश व भारत की कौन सी पार्टी महत्पूर्ण भूमिका निभाएगी इस पर चिंतन चल रहा है। विधानसभा क्षेत्र के मतदाता अपने प्रत्याशियों का चयन करने में काफी जागरूक हैं। विधानसभा चुनाव में युवाओं की अहम भूमिका रहेगी। कई हजार ऐसे मतदाता हैं जो पहली बार वोट का प्रयोग करेंगे। इन मतदाताओं का वोट हार-जीत को सीधे प्रभावित करेगा। युवाओं को लेकर पार्टियां अपने एजेंडे पर काम कर रही हैं। मतदान को लेकर युवाओं में उत्साह है। युवा मतदाता अपने प्रत्याशियों के बारे में पूरी तरह जानकारी जुटा रहे हैं। फिलहाल युवाओं का रुझान सनातन धर्म की और भी बढ़ रहा है। देखना है राजनीति पर युवाओ की यह चर्चा क्या रंग लाती है और 17 नवंबर को राजनीति का ऊंट किस करवट बैठता है।

कैसी मनेगी लाड़ली बहना की दीपावली..?

निर्वाचन आयोग के पाले में गेंद, हर माह 10 तारीख को होती है राशि ट्रांसफर

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। लाडली बहनो की दीपावली सही तरीके से बनेगी या नहीं, यह फैसला अब निर्वाचन आयोग करेगा। चुनाव आचार संहिता के बीच 10 नवम्बर को इस बार लाडली बहना के खातों में राशि ट्रांसफर होगी या नहीं, इस पर चुनाव आयोग से मार्गदर्शन मांगा गया है।

महिला एवं बाल विकास विभाग के आयुक्त ने इस बारे में एक प्रस्ताव निर्वाचन आयोग के सीईओ के पास भेजा है। उन्होंने बताया कि हर महीने की 10 तारीख को राशि ट्रांसफर की जाती है। नवम्बर में जो राशि ट्रांसफर की जाना है। उसके बारे में मार्गदर्शन मांगा गया है। मध्यप्रदेश में 1 करोड 31 लाख ..... शेष पेज 4 पर

पैंतीस किलो डोडाचुरा बरामद, एक गिरफ्तार

सुवासरा, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। पुलिस ने एक आरोपी के कब्जे तीन बेग में भरा 35 किलो डोडाचूरा बरामद किया है। जप्त डोडाचूरा की कीमत 70 हजार रुपए बताई गई है।

सुवासरा पुलिस के मुताबिक मुखबीर सूचना मिली थी कि एक आरोपी अवैध मादक पदार्थ डोडाचूरा लेकर कहीं जाने वाला है। मौके पर तुरंत दबिश दी जाए तो आरोपी गिरफ्त में आ सकता है। पुलिस ने सुवासरा गांव की तरफ जाने वाले कच्चे रास्ते से कमलेश पिता जगदीश लोहार उम्र 26 साल निवासी कांटिया को हिरासत में ले लिया। उसके पास तीन बेग मिले। उनमें 35 किलो अवैध मादक पदार्थ डोडाचूरा बरामद किया गया। मामले में आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/15 के तहत प्रकरण दर्ज किया गया। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही हैं।

मां नहीं बन पा रही थी, इसलिए कर दी हत्या?

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। जिले के बसई के समीप हंसपुरा ग्राम के पुरालाल निवासी सरवानिया तहसील मल्हारगढ की बेटी रचना बाई का विवाह हुआ था। उनकी बेटी रचना मां नही बन पा रही थी, जिसको लेकर उसके ससुराल वाले आये दिन प्रताडित करते थे। पहले कई बार ससुराल वालो ने उसके साथ मारपीट की। मारपीट करने में रचना बाई का देवर, जेठ उनकी पत्नी, रचना का पति ओर सास ससुर शामिल थे। वे आये दिन झगडा करते थे। झगडे से त्रस्त होकर रचना 3 बार अपने मायके भी आ गयी थी ओर घर पर सारी बात बताई की ससुराल में उसके साथ ऐसी घटना होती है। 3 से 4 दिन पहले जब रचना मायके थी, तब उसका पति आया और उसको साथ ले जाने की बोलने लगा। उसने कहा कि करवा चौथ आ रही है तो यह व्रत रखेगी, इसलिए लेने आया हूं ओर लेकर गया। जिसके बाद रचना के परिजनों को फोन आता है कि रचना का देहांत हो चुका है। फिर रचना के माता पिता व अन्य रिश्तेदार मंदसौर अस्पताल में पहुंचते है और जानकारी लेते है।

रचना की मौत को लेकर परिजन बोले कि रचना की हत्या हुई है। उनका शक है कि रचना के ससुराल वालों ने मारपीट अत्यधिक की, जिसके कारण उसकी मौत हो गई। रचना की मौत के बाद उसके मायके वालों ने बॉडी लेने व अन्य कार्यवाही करने से मना कर दिया था। उनका कहना है कि जब तक दोषियों को पकडा नही जायेगा, तब तक न तो शव ले जाएंगे और नही कोई कार्यवाही होगी। कुल मिलाकर कहे तो पूरा मामला महिला के मां नही बनने के कारण हुआ था और ससुराल वाले आये दिन मारपीट करते थे, जिससे महिला को मौत हो गई। देखना है की पुलिस जांच ने क्या सामने आता है।

बाजार में भीड़- आज एक नंवबर बुधवार को करवा चौथ का पर्व मनाया जाएगा। बाजार में खरीददारी के लिए महिलाओ की भीड़ रही।

खरीदारी का दुर्लभ संयोग 400 साल बाद बना

4 को शनिपुष्य और 5 को रविपुष्य, दोनों दिन 8 बड़े योग; दीपावली से पहले निवेश के शुभ मुहूर्त

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। दीपावली से ठीक सप्ताहभर पहले पहले यानी 4 नवंबर शनिवार और 5 नवंबर, रविवार को पुष्य नक्षत्र का दुर्लभ संयोग बन रहा है। दुर्लभ इसलिए, क्योंकि दोनों दिन 8 शुभ योग हैं। ज्योतिषाचार्यों का मानना है कि शनि और रविपुष्य के साथ अष्टमहायोग का ऐसा दुर्लभ संयोग पिछले 400 साल में नहीं बना। दीपावली से पहले शुभ कामों की शुरुआत के लिए ये दो दिन बेहद शुभ और महत्वपूर्ण रहेंगे।

शनिवार को सुबह तकरीबन 8 बजे से पुष्य नक्षत्र शुरू होगा। जो रविवार को सुबह 10 बजे तक रहेगा। इस कारण शनि और रवि पुष्य के दो महामुहूर्त में किए काम लाभदायक, स्थाई और शुभ फलदायी रहेंगे। इन दोनों दिन रियल एस्टेट में निवेश, नए कामों की शुरुआत, वाहन, ज्वेलरी, कपडे और अन्य चीजों की खरीदारी का अक्षय लाभ मिलेगा। घरेलू और ऑफिस में इस्तेमाल की चीजें खरीदना भी शुभकारी रहेगा।

इस संयोग में खरीदी का लंबे समय तक फायदा...

पुरी के ज्योतिषाचार्य डॉ. गणेश मिश्र का कहना है कि 4 नवंबर शनिवार को पुष्य नक्षत्र के साथ शंख, लक्ष्मी, शश, हर्ष, सरल, साध्य, मित्र और गजकेसरी योग रहेंगे। इन शुभ योगों के साथ ही पुष्य नक्षत्र का स्वामी शनि अपनी ही राशि में रहेगा। इन शुभ संयोग में की गई खरीदारी और प्रॉपर्टी में निवेश लंबे समय तक फायदा देगा।

निवेश और लेन-देन के लिए बेहद शुभ संयोग...

काशी विद्वत परिषद के प्रो. रामनारायण द्विवेदी के मुताबिक 5 नवंबर, रविवार को पुष्य नक्षत्र के साथ सर्वार्थसिद्धि, शुभ, श्रीवत्स, अमला, वाशि, सरल और गजकेसरी योग बनेंगे। जिससे निवेश, लेन-देन और नई शुरुआत के लिए ये दिन शुभ रहेगा।

नक्षत्रों का राजा है पुष्य, इस पर दो ग्रहों का प्रभाव...

सभी नक्षत्रों में पुष्य को राजा का दर्जा मिला हुआ है। इसका स्वामी शनि और देवता गुरु होते हैं, इसलिए पुष्य नक्षत्र इन ग्रहों से विशेष प्रभावित रहता है। शनि स्थिरता के स्वामी माने जाते हैं। जबकि गुरु ज्ञान और धन का कारक होते हैं। शनि के प्रभाव से खरीदी गई चीजें लंबे समय तक बनी रहती है और गुरु के प्रभाव से समृद्धि देने वाली होती हैं।

ये मंगलकारी योग देंगे स्थिरता...

पुष्य नक्षत्र में खरीदी शुभता और स्थिरता देती है। शनि और रवि पुष्यामृत के साथ बनने वाले शुभ योग, शनि और गुरु की स्थिति मंगलकारी योग बना रहे हैं। इन शुभ योग में किए हर तरह के काम स्थिरता देने वाले रहेंगे।

– डॉ. गिरिजाशंकर शास्त्री, ज्योतिष विभागाध्यक्ष, बीएचयू

विचार-मंथन

सही दिशा में कोशिशों से जगती है उपलब्धियों की उम्मीद

हौसला बुलंद हो तो कामयाबियों की राह अपने आप खुल जाती है। हाल ही में एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने साबित किया कि सही दिशा में की गई कोशिश से मैदान में जीत और उपलब्धियों का परचम लहराया जा सकता है। अब उसके कुछ ही दिनों बाद हांगझोउ में आयोजित पैरा एशियाई खेलों में भी भारतीय पैरा एथलीटों ने अपनी जिस काबिलियत का प्रदर्शन किया, वह देश और यहां के लोगों के लिए सुखद भविष्य की उम्मीद जगाता है। हांगझाउ में शनिवार को समाप्त हुए एशियाई पैरा खेलों में शुरुआत से ही भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी मजबूत मौजूदगी बनाए रखी और वह निरंतरता आखिर तक बनी रही। अपनी जीत के अभियान में हमारे खिलाड़ियों ने कुल एक सौ ग्यारह पदक जीते, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित बहु-खेल प्रतियोगिता में देश के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। अलग-अलग खेलों में पैरा एथलीटों ने उनतीस स्वर्ण पदक, इकतीस रजत और इक्यावन कांस्य पदक जीते। इस कामयाब प्रदर्शन के बूते भारत ने इन खेलों की पदक तालिका में पांचवा स्थान हासिल किया, जो पिछले प्रदर्शनों के मुकाबले काफी बेहतर रहा। गौरतलब है कि पहला पैरा एशियाई खेल 2010 में चीन के ही ग्वांगझू में आयोजित किया गया था और उसमें भारत को सिर्फ एक स्वर्ण सहित चौदह पदक से संतोष करना पड़ा था। तब भारत पदक तालिका में पंद्रहवें स्थान पर रहा था। उसके बाद धीरे-धीरे सुधार हुआ, मगर इस बार पांचवें थान पर आना यह बताता है कि भारतीय खिलाड़ी अब किसी प्रतियोगिता में सिर्फ उपस्थिति दर्ज कराने के लिए नहीं, बल्कि सक्षम और मजबूत माने जाने वाले देशों के मुकाबले में खड़ा होकर मैदान जीतने के लिए जाते हैं। इस बार की सामूहिक कामयाबी में एथलेटिक्स का सबसे ज्यादा यानी पचपन पदकों का योगदान रहा। दूसरे स्थान पर भारतीय शटलर रहे, जिन्होंने इक्कीस पदक जीते। इसी तरह शतरंज, तीरंदाजी और निशानेबाजी में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा साबित की। मसलन, बिना हाथ की तीरंदाज शीतल देवी इन खेलों में एक ही सत्र में दो स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली महिला बनीं। सभी खिलाड़ियों ने अपने इसी तरह के जज्बे का प्रदर्शन किया। इस पैरा एशियाई खेलों में खिलाड़ियों ने अपनी जिस क्षमता का प्रदर्शन किया उससे साफ है कि प्रतिभा की खोज और सही दिशा में उनका प्रशिक्षण सुनिश्चित करके अवसर मुहैया कराए जाएं, तो नतीजे चौंकाने वाले आ सकते हैं। इससे पहले हांगझाउ में ही एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ी 'अबकी बार, सौ के पार' के लक्ष्य के साथ मैदान में उतरे थे और उसे पार कर एक सौ सात पदक जीते थे। अब पैरा एशियाई खेलों में उससे चार पदक ज्यादा हासिल करना इस बात का संकेत है कि आने वाले वक्त में अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में भारतीय खिलाड़ियों को भी इस क्षेत्र में दुनिया के मजबूत देशों के समकक्ष रख कर देखा जाएगा। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि भारत में प्रतिभाएं बिखरी पड़ी हैं, जरूरत बस उन्हें चुनने की है। कई बार दूरदराज में वंचित समुदायों के बीच कोई ऐसा बच्चा होता है, जिसमें बेहतरीन संभावनाएं छिपी होती हैं, लेकिन अवसर, सलाह, संसाधन, प्रशिक्षण और सही दिशा न मिलने की वजह से उसे दुनिया के सामने अपनी प्रतिभा को साबित करने का मौका नहीं मिल पाता। अब दुनिया के खेल मैदानों में भारत मजबूत दखल देने लगा है। अवसर उपलब्ध हों तो छिपी प्रतिभाएं देश के लिए गौरव का नया अध्याय रच सकती हैं।

यहूदी: फिर नफरत और लड़ाई!

हरिशंकर व्यास

सात अक्टूबर को हमास ने यहूदियों को निर्दयता से मारा तो मुसलमानों में पश्चाताप नहीं दिखा। और अब इजराइल गाजा पट्टी को भुन दे रहा है तो यहूदी और ईसाई शर्मसार नहीं दिख रहे हैं। इसलिए क्योंकि आदि काल से इनके दिल-दिमाग में गांठे हैं कि वे तो बर्बर हैं, उनके साथ ऐसा ही सलूक होना चाहिए। यहूदी ऐसे हैं, मुसलमान ऐसे हैं, ईसाई ऐसे हैं के पीढ़ी-दर-पीढ़ी बोध ने तभी मनुष्य को बार-बार इंसान से नरभक्षी हुआ दिखलाया है। ऐसे में वे लोग क्या करें जो मानवतावादी हैं? क्या वे भी साक्षात सत्य की अनदेखी करें? उसकी जगह भावना और इतिहास की वजह से वे लाइव बर्बरता की तरफदारीकरें? हमास की बर्बरता के आगे यदि इजराइल बर्बर है तो वह सही है, गाजा को भुन देना चाहिए! मैं पत्रकार हूं। और सभ्यताओं के संघर्ष में यहूदियों-इजराइलियों का इसलिए पक्षधर रहा हूं क्योंकि ज्ञात इतिहास की दास्तां में वे सचमुच अन्याय, ज्यादतियों के भुक्तभोगी रहे हैं। अब्राहम के वंशजों में जो आदि धर्म था वह अपने ही वंशज ईसाई व इस्लाम की घृणा और अत्याचारों का मारा रहा है। इतना ही नहीं 1948 में इजराइल के गठन के बाद भी वे चारों तरफ से अरब मुसलमानों से घिरे रहे हैं। मानों यहूदियों की स्थायी नियति है जो वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी घृणा और आतंक में जीयें। मैं यहूदियों की जिजीविषा का कायल हूं। सहस्त्राब्दियों बेघर और दर-दर भटकते हुए, नफरत-हिकारत तथा हिंसा के शिकार होते हुए भी यहूदियों ने अपनी आस्था नहीं छोड़ी। अपने को संघर्षों में तपाया और निखारा। विपरीत परिस्थितियों में जीते-जीते यहूदियों की बुद्धि लगातार पकती और खिलती गई। तभी यूरोपीय पुनर्जागरण के बाद अल्पसंख्या के बावजूद यहूदियों का पुरुषार्थ-ज्ञान-विज्ञान-आधुनिकता में उनका अपूर्व योगदान बना। इजराइल ने भी अपने निर्माण के बाद कुछ ही दशकों में गजब विकास और सफलताओं की कीर्ति बनाई। वह सब अब गड़बड़ाता हुआ है! कैसे? जवाब में जरा सोचें, यहूदी इतिहास की मुख्य ग्रंथि क्या है? मोटा-मोटी ईसाइयों और मुसलमानों द्वारा उनके प्रति धारी हुई या बनवाई नफरत! इसकी वजह से वे अपनी मातृभूमि से बेदखल हुए। एशिया-यूरोप में भटके। सभी महाद्वीपों में या तो हाशिए के तिरस्कृत-अछूत रहे या प्रताड़नाओं के शिकार! उस नाते हिटलर का नस्लीय नरसंहार यहूदी इतिहास का टर्निंग प्वाइंट था। उससे वैश्विक जनमत शर्मिंदा हुआ। यहूदियों के प्रति वैश्विक करुणा पैदा हुई।तभी महायुद्ध खत्म होने के बाद मित्र देशों में यहूदियों का एक राष्ट्र बनाने का संकल्प हुआ। यों इस बात में दम है कि अमेरिका-ब्रिटेन-फ्रांस याकि ईसाई सभ्यता की प्रतिनिधि जमात का यह फैसला भी एक दांव था। इसलिए क्योंकि यहूदियों का देश मुस्लिम आबादी के बीच बना। ताकि यहूदी बनाम मुस्लिम की परस्पर नफरत का नया स्थायी अखाड़ा बने। यहूदियों से ईसाइयों की जन्मजात लड़ाई बैकग्राउंड में दब जाए। सभ्यताओं के संघर्ष में इस्लाम के खिलाफ इजराइल पश्चिमी सभ्यता का स्थायी प्यादा या मोहरा रहे। बहरहाल, असल बात 1948 से पहले यहूदियों का वैयक्तिक जीवन नफरत का शिकार था। यहूदी निज जीवन में अकेले या टोले-बस्ती के घेटो में जीते हुए संघर्ष करते थे। हिटलर ने नस्ल को ही खत्म करने का जब वीभत्स अभियान चलाया तो मानवीय संवेदनाओं का वैश्विक सैलाब बना। नतीजतन इजराइल का गठन हुआ। यहूदियों के लिए देश बना। यहूदियों को पहली बार बतौर राष्ट्र-राज्य सामूहिक, जिंदगी जीने की सार्वभौमता भरी एक चारदिवारी मिली। कह सकते हैं नस्ल को तब नफरत और घृणा सेमुक्ति मिली। 75 वर्षों के इजराइली सफर के आधार पर यह भी कह सकते है कि दुनिया में उसका मान हुआ। यहूदियों के प्रति विश्वास और सम्मान बना। उस नाते मानना गलत नहीं होगा कि इजराइल के 75 साल यहूदी धर्म, नस्ल और समाज का मानों एक गौरवपूर्ण कालखंड। लोकतंत्र, विकास, आधुनिकता, शूरवीरता, निडरता और ज्ञान-विज्ञान-तकनीक सभी में इजराइल और उससे यहूदियों की प्रतिष्ठा बनी। घृणा की जगह प्रशंसा ने ली। नफरत की बजाय रुतबा और इजराइल राष्ट्र वैयक्तिक यहूदी जीवन का संरक्षक, रक्षक का गारंटीदाता हुआ। 1947 में आजाद हिंदुओं के भारत और 1948 में यहूदियों को मिले इजराइल का बेसिक फर्क यह है कि इजराइल में नागरिक स्वयंभू-सार्वभौम जिंदगी जीते आए हैं। वहां नागरिक और उसके अधिकार पहले हैं। सरकार और सत्ता हमेशा उत्तरदायी रही है, जबकि आजाद भारत में सरकार75 वर्षों से हम हिंदुओं पर वैसे ही शासन करते हुए है, जैसे अंग्रेज करते थे। भारत में सरकार जहां हिंदुओं की माई-बाप है वही इजराइल में यहूदियों की स्वतंत्रता सर्वोच्च है और सरकार जवाबदेह। तभी वहां हर नागरिक देश की रक्षा की खुद ट्रेनिंग लिए होता है। वहा सरकारें आती-जाती व पार्टियां बनती-बिगड़ती रहती है। हमास का आतंकी हमला हुआ तो देश का हर नौजवान सेना की ड्यूटी के लिए लाइन पर लगा हुआ था। सभी पार्टियां, सारा मीडिया एक सुर में यहूदी भावना व्यक्त करता हुआ था। इसलिए क्योंकि बच्चा-बच्चा यह जाने हुए है कि अपना घर होने, अपना देश होने का उनकी नस्ल, धर्म, कौम में क्या अर्थ है? यह सब बदलना शुरू हुआ बेंजामिन नेतन्याहू के प्रधानमंत्री बनने के बाद से। उनकी सत्ता भूख ने इजराइल को बदला। और वक्त निश्चित ही यह प्रमाणित करेगा कि नेतन्याहू ने प्रधानमंत्री बने रहने की जिद में वे गलतियां कीं, जिससे इजराइली समाज में पुराना इतिहास फिर सुलगने लगा। हिसाब से ओस्लो करार या लिकुड पार्टी के बेगिन और यासिर अराफात में समझौता प्रमाण है कि नेतन्याहू से पहले यहूदी और फिलस्तीन सह-अस्तित्व की ओर बढ़ते हुए थे। इजराइल याकि यहूदी लोग फिलस्तीन देश का मूड बनाते हुए थे। अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर, बिल क्लिंटन, ओबामा आदि ने दो देश की भूमिका बना दी थी। लेकिन नेतन्याहू ने अपनी सत्ता के लिए उन कट्टरपंथी धड़ों, छोटी पार्टियों की मनमानी बनाई, जिनका इलहाम समूची पवित्र भूमि की मुक्ति का है। तभी फिलस्तीन बस्तियों को खाली करा कर जोर-जबरदस्ती नए सेटलमेंट का वह सिलसिला चला,जिससे नफरत, आतंक, हमास और हिजबुल्ला सबको पंख मिले। यह भी रियलिटी है कि 2023 की शुरुआत से समझदार यहूदी नागरिकों के इजराइल छोड़ कर विदेश जा बसने का ट्रेंड था। नेतन्याहू और उनके कैबिनेट की मनमानी से यहूदियों में ऐसा मोहभंग हुआ कि लोग यूरोप, अमेरिका लौटते हुए थे। सबको पता है।

कमरतोड़ महंगाई से आम जनता त्रस्त...

विनीत नारायण

आज दुनिया भर में पैट्रोलियम पदार्थों व खाद्यान्न का संकट खड़ा हो गया है। इसलिए महंगाई भी बढ़ रही है। पर कोई यह जानने की कोशिश नहीं कर रहा कि यह हालात पैदा कैसे हुए? सारी दुनिया को तरक्की और ऐशो-आराम का सपना दिखाने वाले अमरीका जैसे देशों के पास कोई हल क्यों नहीं है। अभी तो भारत के एक छोटे से मध्यमवर्ग ने अमरीकी विकास मॉडल का दीवाना बन कर अपनी जिंदगी में तड़क-भड़क बढ़ानी शुरू की है। जिस तरह के विज्ञापन टी.वी. पर दिखाकर मुट्ठी में दुनिया कैद करने के सपने दिखाए जाते हैं अगर वाकई हर हिंदुस्तानी ऐसी जिंदगी का सपना देखने लगे और उसे पाने के लिए हाथ पैर मारने लगे तो क्या दुनिया के अमीर देश एक सौ दस करोड़ भारतीयों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाएंगे? क्या दे पाएंगे उन सबको जरूरत का खाद्यान्न और पैट्रोल? आज दुनिया में गरीबी समस्या नहीं है। समस्या है दौलत का चंद लोगों के हाथ में इकट्ठा होना। धनी देश और धनी लोग साधनों की जितनी बर्बादी करते हैं उतनी में बाकी दुनिया सुखी हो सकती है। उदाहरण के तौर पर इंगलैंड के लोग हर वर्ष 410 अरब रु. की कीमत का खाद्यान्न कूड़े में फैंक देते हैं। पश्चिमी विकास का मॉडल और जीवन स्तर हमारे देश के लिए बिल्कुल सार्थक नहीं है। पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दबाव में हमारी सरकारें जनविरोधी नीतियां अपना कर अपने प्राकृतिक साधनों का दुरुपयोग कर रही हैं और उन्हें बर्बाद कर रही हैं। दुनिया का इतिहास बताता है कि जब जब मानव प्रकृति से दूर हुआ और जब-जब हुक्मरान रक्षक नहीं भक्षक बने तब तब आम आदमी बदहाल हुआ। कुछ वर्ष पहले एक टैलीविजन चैनल पर एक वृत्तचित्र देखा था जिसमें दिखाया गया था कि विश्व बैंक से मदद लेने के बाद अफ्रीका के देशों में कैसे अकाल पड़े और कैसे भुखमरी फैली। क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय मदद को तो बेईमान नेता, अफसर और दलाल खा गए। जनता के हिस्से आई महंगाई, मोटे टैक्स, खाद्यान्न का संकट और भुखमरी। इस फिल्म में रोचक बात यह थी कि उस देश के आम लोगों ने मिट्टी, पानी, सूरज की रोशनी और हवा की मदद से अपने जीने के साधन फिर से जुटाने शुरू कर दिए थे। भारत की वैदिक संस्कृति प्रकृति की पुजारी थी। प्रकृति के साथ संबंध बनाकर जीना सिखाती थी। कृषि गौ आधारित थी और मानव कृषि आधारित और दोनों प्रकृति के चक्र को तोड़े बिना शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का जीवन जीते थे। दूसरी खास बात यह थी कि जब-जब हमारे राजा और हुक्मरान शोषक, दुराचारी और लुटेरे हुए तब-तब जनता को नानक, कबीर, रैदास, मीरा, तुकाराम, नामदेव जैसे संतों ने राहत दी। आज सरकार राहत दे नहीं पा रही है। लोकतंत्र होते हुए भी आम आदमी सरकार की नीतियों को प्रभावित नहीं कर पा रहा है। उसके देखते-देखते उसका प्राकृतिक खजाना लुटता जा रहा है और वो असहाय है। तकलीफ की बात तो यह है कि आज उसके जख्मों पर मरहम लगाने वाले संत भी मौजूद नहीं। टी.वी. चैनलों पर पैसा देकर अपने को परमपूज्य कहलवाने वाले चैनल बाबाओं की धूम मची है। अरबों रुपया कमाकर अपने को वैदिक संस्कृति का रक्षक बताने वाले ये आत्मघोषित संत पांच सितारा आश्रम बनाने और राजसी जीवन जीने में जुटे हैं। इनकी जीवन शैली में कहीं भी न तो प्रकृति से तालमेल है और न ही वैदिक संस्कृति का कोई दूसरा लक्षण ही। इनके जीवन में और अमरीका की रईसी जीवन शैली में क्या अंतर है?वैदिक ऋषि गाय, जमीन, जंगल और पानी के साथ आनंद का जीवन जीते थे। श्रम करते थे। पर आज अपने को संत बताने वाले अपने परिवेश का विनाश करके भोगपूर्ण जीवन जीते हैं और लाखों लोगों को माया मोह त्यागने और वैदिक मान्यताओं पर आधारित जीवन जीने का उपदेश देते हैं। इनकी वाणी में न तो तेज है और न ही असर। इसलिए आम जनता के संकट आने वाले दिनों में घटने वाले नहीं हैं।

टूडो, खालिस्तानियों को जवाब देना है सही, भारत का कड़ा रुख अन्य देशों के लिए भी है एक संदेश

बीते एक दशक से कनाडा भारत में मध्यवर्गीय नई पीढ़ी की आखिरी उम्मीद बना हुआ है। पंजाब के खेतिहर नौजवानों के लिए तो यह धुर ठंडा मुल्क पहले से ही ऐसा था, लेकिन शेष भारत इसकी खोज अभी थोड़ा ही पहले कर पाया है। ज्यादा सटीक कहना हो तो अमेरिका में महामंदी शुरू होने से कुछ पहले वहां के स्किल्ड युवाओं में भारत के सॉफ्टवेयर इंजीनियरों और चार्टर्ड एकाउंटेंटों के खिलाफ आक्रोश दिखने और 2008 के अमेरिकी आम चुनाव में 'माय जॉब इज बैंगलोर्ड' छपी हुई टी-शर्ट्स के पॉप्युलर हो जाने के बाद। मंदी का झटका कम होने के साथ ही कनाडा और ऑस्ट्रेलिया की ओर शुरू हुई भागमभाग बाद में कनाडा की तरफ लगभग एकतरफा हो गई। बीते एक महीने से भारत और कनाडा के बीच जारी कूटनीतिक टकराव के बहुत बुरे मुकाम तक पहुंच जाने से इस रुझान पर फिलहाल अचानक ब्रेक लग गया है। हालत यह है कि देश भर में जो दसियों हजार लोग कनाडा के वीजा के लिए अर्जी लगाए बैठे हैं, उनमें किसी से भी बात करने पर कोई तेज रफ्तार मालगाड़ी पलट जाने जैसा विचित्र अनुभव हो रहा है। ऐसा क्यों हुआ, इस बारे में बहुत सारी बातें रोज कही-सुनी जा रही हैं। फिर भी इन्हें संक्षेप में यहां दोहरा देने में कोई हर्ज नहीं है। 18 जून 2023 को कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत में एक गुरुद्वारे की पार्किंग में खालिस्तानी नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या हो गई थी। हत्या किसने की, इस बारे में कनाडा की पुलिस अब तक कोई ठोस जानकारी नहीं जुटा पाई है। लेकिन 20 सितंबर 2023 को कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने वहां की संसद को बताया कि इसके पीछे भारतीय सुरक्षा एजेंसियों का हाथ है। इतना ही नहीं, कनाडा सरकार ने अपने यहां स्थित एक भारतीय राजनयिक को 'अवांछित व्यक्ति' (पर्सोना नॉन ग्राटा) घोषित कर दिया और कुछ ऐसा माहौल बनाया, जैसे भारत सरकार का काम ही हो, विदेशों में अपने एजेंट भेजकर हत्याएं कराना। शुरू में ऐसा लग रहा था कि कनाडा सरकार की तरफ से इतना तो एहतियात बरता ही जाएगा कि कम से कम निज्जर हत्याकांड की जांच के अंतिम नतीजे आने तक स्थिति को बेकाबू न होने दिया जाए। लेकिन इस दिशा में बढ़ने के बजाय ट्रूडो सरकार मामले को अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और ब्रिटेन की जांच एजेंसियों के गठबंधन 'फाइव आइज' में ले गई और वहां भी भारत का पक्ष सुने बगैर ट्रूडो के बयान पर मोहर लगा दी गई। ऐसे में भारत के पास नरमी दिखाने की कोई वजह नहीं बची। पहले इधर से भी कनाडा के एक राजनयिक को पर्सोना नॉन ग्राटा घोषित किया गया, फिर कह दिया गया कि भारत के जितने राजनयिक कनाडा में हैं, उतने ही कनाडाई राजनयिक भारत में रह सकते हैं। बाकी 20 अक्टूबर तक अपने देश लौट जाएं, वरना इसके बाद उन्हें मिले हुए सभी राजनयिक विशेषाधिकार और सुरक्षा वापस ले ली जाएगी। जवाब में कुछ दिनों के टाल-मटोल के बाद 19 अक्टूबर को कनाडा ने अपने 41 राजनयिक वापस बुला लिए। उसके कुल 62 राजनयिक हाल तक भारत में थे, जबकि भारत के 21 राजनयिक कनाडा में मौजूद हैं। अभी दोनों देशों में एक-दूसरे के राजनयिकों की संख्या बराबर हो गई है। यहां दुनिया के विकसित, अमीर मुल्कों और भारत जैसे विकासशील देशों के कूटनीतिक रिश्तों की एक पेचीदगी पर बात करना जरूरी है। कुछ मायनों में ये रिश्ते एकतरफा हैं।

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5041

3	2		8		5		7	
		7						3
	1	5	7					
		2					3	1
	4		3	9	1		5	
1	5					8		
					7	3	4	
8						9		
	3		1		4		6	7

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5040

7	3	2	5	6	1	8	4	9
8	1	5	4	2	9	3	7	6
6	9	4	7	8	3	5	2	1
1	8	3	6	5	2	7	9	4
4	2	9	8	1	7	6	3	5
5	7	6	9	3	4	2	1	8
9	4	8	3	7	5	1	6	2
3	6	1	2	9	8	4	5	7
2	5	7	1	4	6	9	8	3

वर्ग पहेली 5041

संकेत: बाएं से दाएं

1. 1998 को यहां अफ्रिका ने वेस्टइंडीज को हराकर क्रिकेट का मिनी वर्ल्ड कप जीता (2)
3. भारत में पहला भाप इंजन पश्चिम बंगाल में स्थित यहां के रेल कारखाने में 1950 को बनाया गया (5)
7. षड्ज, दूत, संपूर्ण जाति का शुद्ध स्वरों का एक राग (2)
8. सुअवसर, लाभ (2)
9. दो की संख्या, मिथुन, युग्म (2)
10. नया आया हुआ (4)
12. जल की बूंद, राजस्थान का एक शहर (3)
13. अगर ऐसा न होता तो (2)
14. पुरुष, मर्द (2)
15. निराश, नाउम्मीद, निरुत्साहित (3)
17. किसी नगर-कस्बे आदि का प्रवेश स्थल (2)
19. जल, बुनियाद, आदि कारण (2)
22. सहयोग, सहायता, इमदाद (3)
24. जो किया जाए, काम, क्रिया (2)
25. अज्ञात, अप्रसिद्ध (4)
26. माता सरस्वती का एक नाम (3)

ऊपर से नीचे

1. ढलानयुक्त, अधोगामी, ढलवां (2)
2. कामचोरी करना (6)
3. दीपक, दीया (3)
4. पुरानी फिल्मों के प्रसिद्ध पार्श्वगायक (7)
5. भारतीय स्वतंत्रता सेनानी जो लोकनायक नाम से भी जाने गए (सिर्फ अंतिमनाम)(5)
6. हल्का गीला, आर्द्र (2)
11. प्रहार, हमला करने की क्रिया (2)
12. दूरस्थ (अंग्रेजी) (2)
16. नृत्य-गीत का मान, करतल ध्वनि (2)
18. आरजू, तमन्ना, इच्छा (3)
20. इस नदी का एक नाम रेवा भी है (3)
21. गतिहीन, शक्तिहीन, लंगड़ा (2)
23. बल, कला, ताकत (2)
24. हाथ, हस्त, मकबूल (2)

वर्ग पहेली 5040 का हल

नामांकन के साथ यशपाल ने किया विजय घोष, वरिष्ठों ने दिया आशीर्वाद

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर विधानसभा के मौजूदा विधायक यशपालसिंह सिसौदिया ने चुनाव नामांकन के आखिरी दिन सोमवार को अपना पर्चा दाखिल किया। इस मौके पर पार्टी के कई वरिष्ठों ने पहुंचकर उन्हें जीत का आशीर्वाद दिया। नामांकन रैली से पूर्व आयोजित सभा में सांसद सुधीर गुप्ता, जिला भाजपा अध्यक्ष नानालाल अटोलिया सहित वरिष्ठ नेता एवं पार्टी पदाधिकारी मौजूद थे।

इससे पहले मंदसौर विधासभा निर्वाचन के अंतर्गत चुनाव कार्यालय का उद्घाटन सांसद सुधीर गुप्ता, भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बंशीलाल गुर्जर, विधानसभा प्रभारी जगदीश परमार की उपस्थिति में किया गया था। जिसमें बडी संख्या में भाजपा पदाधिकारी एवं पार्टी कार्यकर्ता मौजूद थे। इस दौरान सभी ने सामूहिक रूप से मन की बात कार्यक्रम को भी सुना। विकास किया है, विकास करेंगे, फिर इस बार भाजपा सरकार.. के नारे के साथ यशपाल लगातार अपने चुनाव क्षेत्र में पहुंचकर लोगों से जनसंपर्क कर रहे हैं। इस दौरान वे ग्राम गुडभेली, गांगाखेडी, धारियाखेडी, रलायता, मुल्तानपुरा, भुनियाखेडी, लालघाटी, सिंदपन, गुराडिया देदा, चांगली, बाजखेडी, अरनिया निजामुद्दीन, पानपुर, दमदम, आक्या फत्तू, मिर्जापुरा, गोरखेडी, बुचाखेडी, अघोरिया, सेजपुरिया एवं भालोट में जनसंपर्क कर मतदाताओं से मिलकर भारतीय जनता पार्टी को पुन: जनादेश देने की अपील कर चुके हैं। यशपाल कहते हैं कि विजय के विश्वास के साथ हमारा सेवा संकल्प मतदाताओं के उत्साह से प्रतिदिन और मजबूत हो रहा है।

इतने है वोटर, इतनी है आबादी- 2018 के विधानसभा चुनाव में मंदसौर सीट पर 8 उम्मीदवार आमने- सामने थे। लेकिन, मुख्य मुकाबला बीजेपी और कांग्रेस के बीच रहा था। बीजेपी के यशपाल सिंह सिसोदिया को चुनाव में 102626 वोट मिले तो कांग्रेस के नरेंद्र नहाटा के खाते में 84256 वोट आए। सिसोदिया ने 18370 मतों के अंतर से चुनाव में जीत हासिल की थी।

यह है राजनीतिक इतिहास- मंदसौर सीट पर पिछले कुछ चुनावों के परिणामों पर नजर डालें तो यहां पर बीजेपी का ही दबदबा दिखा है। 2003 के चुनाव में बीजेपी प्रत्याशी ओमप्रकाश पुरोहित ने कांग्रेस के नवकृष्ण पाटिल को हराया था। 2008 के चुनाव में बीजेपी प्रत्याशी यशपाल सिंह सिसौदिया ने कांग्रेस के महेंद्र सिंह गुर्जर को 1685 मतों के अंतर से हरा दिया। 2013 में भी मंदसौर सीट का परिणाम यही रहा। बीजेपी प्रत्याशी यशपाल सिंह सिसौदिया ने भी लगातार दूसरी बार इस सीट से जीत हासिल की। 2018 में भी यशपाल सिंह ने जीत की हैट्रिक लगाते हुए लगातार तीसरी जीत दर्ज कराई थी।

पोलिटेक्नीक कॉलेज जावद ने मतदाता जागरूकता रैली निकाली

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। शासकीय पॉलिटेक्नीक कॉलेज जावद द्वारा में स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत मतदाता जागरूकता अभियान के तहत एक रैली का आयोजित की गई। प्राचार्य श्री संजय विश्वकर्मा के मार्गदर्शन में आयोजित इस मतदाता जागरूकता रैली में महाविद्यालय के स्टाफ एवं छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। रैली महाविद्यालय परिसर से प्रारंभ होकर ग्राम मोरका, बरखेडा कामलिया पंचायत परिसर पर समाप्त हुई। रैली में 82 विद्यार्थियों ने भाग लेकर मतदाता जागरूकता का संदेश देते हुए मतदाताओं को 17 नवम्बर को मतदान केंद्र पहुंचकर, नैतिक मतदान करने के लिए प्रेरित किया।

बैंकों का राष्ट्रीयकरण करके आयरन लेडी के नाम से जानी गई इंदिरा गांधी-पाटिल

शहर ब्लॉक कांग्रेस ने स्व. श्रीमती गांधी की पुण्यतिथि व सरदार पटेल की जयंती मनाई

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी की पुण्यतिथि तथा लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर मंदसौर शहर कांग्रेस द्वारा खानपुरा प्रतापगढ पुलिया पर कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर पूर्व विधायक श्री नवकृष्ण पाटिल ने कहा कि स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी ने सन 1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने पर स्वर्गी, श्रीमती इंदिरा गांधी आयरन लेडी के नाम से जानी गई श्र इंदिरा जी की कुशलता से 1984 में ऑपरेशन मेघदूत में सियाचिन पर भारत का कब्जा हो गया था श्र श्री पटेल ने 562 रियासतों को एक करके भारत का नव निर्माण किया था श्र सरदार पटेल वर्ण भेद तथा वर्ग भेद के कट्टर विरोधी थे। इस अवसर पर पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश रातडिया ने पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्ग.श्रीमती इंदिरा गांधी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा की 1971 में पाकिस्तान के 90 हजार सैनिक गिरफ्तार करके बांग्लादेश का निर्माण कर पूरे विश्व में अपना लोहा मनवाया। श्रीमती इंदिरा जी के कार्यकाल में भारत ने 1974 में परमाणु परीक्षण करके दुनिया को हैरत में डाल दिया था। स्वर्गी.श्री सरदार वल्लभभाई पटेल की जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्री रातडिया ने कहा कि बारडोली सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे श्री पटेल को सत्याग्रह की सफलता पर वहां की महिलाओं ने सरदार की उपाधि प्रदान की थी श्र इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन शहर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष डॉ राघवेंद्र सिंह तोमर ने किया आभार खानपुरा मंडलम अध्यक्ष रमेश ब्रिजवानी ने माना श्र इस अवसर पर जिला कांग्रेस के पदाधिकारीकरण, ब्लॉक कांग्रेस के पदाधिकारी, मंडलम अध्यक्ष, सेक्टर अध्यक्ष, बि एल ए स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ता बडी संख्या में उपस्थित थे। यह जानकारी जिला कांग्रेस प्रवक्ता राजनारायण लाड ने दी।

नन्हे-मुन्नों ने की मतदान की अपील

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। जैसे जैसे मतदान की तारीख़ 17 नवम्बर नजदीक आ रही है । निर्वाचन आयोग के माध्यम से नगर व जिले में मतदाताओं को जागरूक किये जाने और मताधिकार उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जारहा है। मंदसौर में स्वीप अभियान अंतर्गत अभिनंदन नगर स्थित विबोध प्रीस्कूल के छोटे छोटे बालक बालिकाओं ने खेल गतिविधियों , मिनी दौड में हिस्सा लिया और जागरूकता के पोस्टर प्रदर्शित करते हुए अधिक से अधिक मतदान की अपील की। स्टॉफ द्वारा मतदान की सामुहिक शपथ ली गई।

स्कूली बच्चों के पोस्टर बैनर पर - ' हम बच्चों की यही पुकार - शत प्रतिशत मतदान हो इस बार '। ' करेंगे जब सब मतदान तभी होगा राष्ट्र निर्माण '। 'मतदान है अधिकार प्रजातंत्र होगा साकार' " Your Vote Will Decide Our Future " ' आपका मत हमारा भविष्य तय करेगा ' आदि के द्वारा जागरण करते हुए अपील की । पोस्टर लहराते हुए अभिभावकों से मतदान करने का आव्हान किया । विबोध स्कूल प्रबंधन की इस सामयिक और अच्छी पहल का स्वागत करते हुए मंगलवार दोपहर अभिनंदन नगर के स्कूल परिसर में पहुंच कर स्वीप प्लान नोडल अधिकारी एवं सीईओ जिला पंचायत कुमार सत्यम के निर्देश पर मंदसौर नीमच जिले के जिला खेल अधिकारी विजेन्द्र देवडा , शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय लीड कॉलेज मंदसौर के स्पोर्ट्स ऑफिसर राजू कुमार ने मतदाता

जागरूकता अभियान में सहयोग और सहभागिता के लिए प्रशस्ति पत्र विबोध प्रीस्कूल डायरेक्टर इंजी. अभिषेक बटवाल , प्रिंसिपल श्रुति बटवाल को प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर जिला महिला बाल विकास विभाग की सहायिका सोनाली चौहान , वार्ड 21 की आंगनवाडी कार्यकर्ता श्रीमती संजीता जोशी , वार्ड 5 की आंगनवाडी कार्यकर्ता श्रीमती रेखा व्यास विशेष रूप से उपस्थित थीं । खेल और युवा कल्याण विभाग मध्यप्रदेश शासन के जिला अधिकारी श्री देवडा एवं लीड कॉलेज स्पोर्ट्स ऑफिसर श्री राजू कुमार ने विबोध स्कूल बच्चों से संवाद कर प्रोत्साहित किया । आरम्भ में स्कूल प्रिंसिपल श्रुति बटवाल , प्रबंधक गौरव सोनी ने अतिथियों का स्वागत किया।

देश के प्रति समर्पण ही महापुरूषों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। मौजूदा विषम परिस्थितियों में देश के प्रति समर्पण ही महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, पूर्व उपप्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री श्री वल्लभभाई पटेल द्वारा देश के प्रति दी गई सेवाएं हमेशा याद रखी जाएंगी। ये उद्गार श्रम शिविर में श्रीमती गांधी के शहादत दिवस एवं श्री पटेल के जन्मदिन पर आयोजित सभा में वक्ताओं ने रखे। श्रीमती गांधी एवं श्री पटेल ने सर्वहारा वर्ग के कल्याण के लिये कार्य किये। जिला इंटक महिला अध्यक्ष श्रीमती मधु कडावत, जिला इंटक उपाध्यक्ष श्री विक्रम विद्यार्थी, श्री गोपाल गुरू, जिला महामंत्रीद्वय श्री डी.एस. चन्द्रावत, श्री वीरेन्द्र पंडित, श्री शरद पारिख, श्री जगदीश पाटीदार, श्री सुनील गुप्ता, श्री सुरेन्द्र कुमावत, श्री राजेन्द्र चौधरी, श्री सुजानमल जैन, श्री सत्यनारायण मालवीय, श्री मनोज भटनागर, श्री सत्यनारायण कुमावत, श्री कन्हैयालाल भदानिया, श्री घनश्याम चौहान, श्री भंवरलाल कुमावत, श्री अशोक व्यास आदि ने राष्ट्र के नेताओं की सेवाओं का स्मरण कर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। संचालन जिला इंटक महामंत्री श्री वीरेन्द्र पंडित ने किया। आभार युवा इंटक के प्रदेश सचिव श्री सुनील गुप्ता ने माना।

अपर कलेक्टर सुश्री मीना ने छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी हेतु पुस्तकें भेंट की

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। शासकीय अनुसूचित जाति महाविद्यालयीन बालक छात्रावास, नीमच में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों द्वारा विगत दिनों अपर कलेक्टर सुश्री नेहा मीना से भेंटकर अपनी समस्याओं के संबंध में अवगत कराया गया था। विद्यार्थियों द्वारा इस दौरान प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु पुस्तकें उपलब्ध कराने का निवेदन भी किया था। छात्रों की समस्याओं को गंभीरता से लेकर अपर कलेक्टर सुश्री मीना द्वारा संबंधित विभाग को विद्यार्थियों को आ रही समस्याओं का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिये थे। उक्त निर्देशों के अनुरूप विद्यार्थियों की समस्या का समाधान भी विभाग द्वारा कर दिया गया है। अपर कलेक्टर सुश्री मीना द्वारा विद्यार्थियों की प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति रूचि को देखते हुए उनकी मांग के अनुरूप मंगलवार को प्रथम चरण में एमपी पीएससी एवं यूपीएससी सहित अन्य प्रतियोगी

परीक्षाओं में उपयोगी पुस्तकें भेंट की। भविष्य में भी विद्यार्थियों को उनके बौद्धिक विकास हेतु पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएगी। अपर कलेक्टर सुश्री मीना ने इस अवसर पर विद्यार्थियों की छात्रावास स्तरीय वाचनालय समिति का गठन करने के निर्देश दिये। समिति द्वारा विद्यार्थियों को पुस्तकें उपलब्ध कराई जायेगी तथा उनका लेखा-जोखा भी रखा जाएगा। विद्यार्थियों द्वारा समिति गठन के संबंध में अपर कलेक्टर सुश्री मीना को सहमति दी। शासकीय अनुसूचित जाति महाविद्यालयीन बालक छात्रावास, नीमच में निवास कर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों द्वारा अपने शैक्षणिक अध्ययन कार्य के साथ-साथ ही विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी की जा रही है। विद्यार्थियों की इस रूचि को दृष्टिगत रखते हुए अपर कलेक्टर सुश्री नेहा मीना ने विद्यार्थियों की तैयारी हेतु उपयोगी प्रतियोगी परीक्षा तैयारी हेतु पुस्तकों का सेट मंगलवार को अपने कक्ष में विद्यार्थियों को भेंट किया। अपर कलेक्टर सुश्री मीना ने विद्यार्थियों को लगन एवं मेहनत से अध्ययन कर प्रतियोगी परीक्षाओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर उच्च पदों पर पहुचने की प्रेरणा भी दी। इस अवसर पर श्री राकेश कुमार राठौर, जिला संयोजक एवं विद्यार्थीगण भी उपस्थित थे।

मतदाता जागरूकता रैली निकाली

नंदावता, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने गांव में जागरूकता रैली निकालकर 100% मतदान का संदेश दिया !इस अवसर पर बस स्टैंड पर मानव श्रृंखला बनाई! वृद्ध ,दिव्यांग व महिलाओं को घर-घर जाकर मतदान के लिए प्रेरित किया! नए मतदाताओं को मतदान के लिए शपथ दिलाई! इस अवसर पर विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य दुर्गा लाल सेन ,वरिष्ठ शिक्षक श्री राम रतन कुमावत, श्री शंभू सिंह खरवर, श्री सुरेश कुमार माली ,श्रीमती पिंकी कुमावत, श्रीमती प्रेरणा उपाध्याय, श्रीमती प्रीति शर्मा ,श्री गायत्री प्रसाद शर्मा ,श्री हरीश , श्री सूरत राम जी राठौड ,श्री देवीलाल कुमावत, श्री राहुल सिंह, श्री कमलेश मालवीय , ग्राम पंचायत सचिव हरीश जी एवं समस्त आंगनबाडी कार्यकर्ताएं एवं वरिष्ठ ग्रामीण जन आदि उपस्थित थे!

स्वतंत्र एवं निष्पक्ष मतदान करने का लिया संकल्प

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। सकल वाल्मीकि समाज, मंदसौर द्वारा एक बैठक आयोजित की। बैठक में उपस्थितजनों ने आगामी विधानसभा निर्वाचन-2023 में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रूप से मतदान करने का संकल्प लिया। साथ ही अपने परिवारजनों एवं इष्टमित्रों को भी मतदान करने हेतु प्रेरित करने की बात कहीं। बैठक में विगत दिनों आयोजित वाल्मीकि जयंती के कार्यक्रमों की समीक्षा भी की गई।

मतदान का संकल्प चेतन गनछेड ने दिलाया। समीक्षा बैठक में वाल्मीकि समाज के अध्यक्ष राजाराम तंवर, पटेल मुकेश चनाल, चौधरी नरेश परमार, गणपति चतुर्थी समिति के अध्यक्ष मंगल कोटियाना, मातादीन अम्बेडकर सेना के संस्थापक विनोद खेरालिया, अध्यक्ष थानसिंह घावरी, पवन दलौर, सचिन तंवर, प्रकाश कल्याणे, बसंत परमार, घीसालाल केसरिया, विनोद छपरी, जगदीश कोडावत, अर्जुन कोडावत, बंटी कोटियाना, लखन डगले, अरूण डगले, राजेश बिडवान, दिलीप बागडिया, भेरूलाल बारवासिया, लखन उटवाल, मुकेश राठौर, अजय भाटी, भुपेश धारू, मुकेश हंस आदि सभी कायकर्ताओं की उपस्थिति में मातादीन अम्बेडकर के संरक्षक श्री चेतनदास गनछेड के निवास स्थान पर की गई। जिसमें जयंती की सफलता एवं कमियों पर सभी ने अपने-अपने विचार रखे तथा आगामी दिनों में कमियों को दूर करने का प्रण लिया गया। श्री गनछेड ने उपस्थित सभी समाजजनों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन सतीश खेरालिया ने किया तथा आभार मंगल कोटियाना द्वारा माना गया।

इंदिरा जी के चित्र व सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया

मल्हारगढ़, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। इंदिरा गांधी ने अपने कार्यकाल में बहुत दमदार फैसले लिए, जिन्होंने पूरे देश मे क्रांति ला दी थी। जवाहरलाल नेहरू की राजनीतिक विरासत को संभालते हुए इंदिरा गांधी ने गूंगी गुडिया के तमगे को हटाया ओर दमदार महिला के रूप में खुद की पहचान बनाई। उक्त बात मंगलवार को मल्हारगढ ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अनिल शर्मा ने देश की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की पुण्यतिथि राजीवगांधी उद्यान में नगर कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कही। शर्मा ने कहा कि देश की कई दिग्गज महिलाएं है जो नारी शक्ति की मिसाल है। इन महिलाओं का जीवन हर किसी के लिए प्रेरणा है। आज के दौर में स्त्री को शिक्षा हासिल करने, सपने देखने, करियर बनाने और आर्थिक तौर पर सशक्त बनने के लिए प्रोत्साहित करने वाली इन्ही महिलाओं की सूची में एक नाम इंदिरा गांधी का है।

इस अवसर पर नप के पूर्व अध्यक्ष चौथमल गुप्ता ने कहा कि पूरे देश को एकता के सूत्रधार सरदार पटेल की जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस मना रहा है। राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है। इस मौके पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता मोहनलाल गुप्ता, नगर कांग्रेस अध्यक्ष रामप्रसाद फरक्या ब्लॉक कांग्रेस के कार्यवाहक अध्यक्ष कन्हैयालाल पाटीदार, जिला पंचायत के पूर्व सदस्य अशोक खींची, वरिष्ठ कांग्रेस नेता विजेश मालेचा, जिला कांग्रेस महामन्त्री मुकेश निडर, वीरेंद्र राणावत, किशनलाल चौहान, मंडलम अध्यक्ष दिनेश गुप्ता काचरिया कन्हैयालाल गुर्जर, किशोर उनियारा, महेंद्र गेहलोत, सरफराज मेव, पार्षद अशोक कोहली, विष्णु फरक्या, सेक्टर अध्यक्ष मनीष धनोतिया, सुरेंद्र सिंह शक्तावत, अजय बोराना जोंटी, विक्की पेंटर, आबिद खा पठान, ओमप्रकाश नाई आदि मोजूद थे।

करवा चौथ विशेष-

करवा चौथ में
पानी पिलाना मुझे
छलनी से आज
चांद निहारू
बिन पानी पिये
पूरा दिन गुजारू
समर्पण से प्रेम
का जले दिया
हर दम साथ
रहे मेरे पिया
अपनी नजरों से
मत गिराना मुझे
करवा चौथ में
पानी पिलाना मुझे।

नन्दकिशोर राठौर, मंदसौर

नीमच जिले में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। देश व प्रदेश के साथ ही नीमच जिले मे भी स्व .श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती 31 अक्टूबर 2023 को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई गई। संयुक्त कलेक्टर कार्यालय भवन में अपर कलेक्टर सुश्री नेहा मीना ने अधिकारी-कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ दिलाई। सामुहिक शपथ ग्रहण कार्यक्रम में संयुक्त कलेक्टोरेट स्थित विभिन्न कार्यालयों के अधिकारी-कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ दिलाई। अन्य विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति में राजस्व, कलेक्टोरेट, तहसील, जनसम्पर्क, पुलिस खाद्य, कृषि, शिक्षा, महिला एवं बाल विकास सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने राष्ट्रीय एकता की सामूहिक रूप से शपथ ग्रहण की। इस मौके पर संयुक्त कलेक्टर श्री राजेश शाह, सुश्री प्रीती संघवी, डिप्टीं कलेक्टर सुश्री किरण आंजना व अन्य जिला अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

ऐसे तो देश को मजबूत नही बना सकेंगे...

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। देश में चुनावी वातावरण हे। कई राज्यो में चुनाव हे और इसके बाद लोकसभा चुनाव भी हे। इन चुनावो की खासियत यह हे की राजनेतिक दल निरंतर घोषणाएं कर रहे हे की हमे वोट दो हम सभी चीज मुफ्त देकर सारी सुविधाएं उपलब्ध करवाएंगे। कोई भी दल इसमे पीछे नही रहना चाहता। एक प्रतिस्पर्धा सी सभी दलो में चल पडी हे की हम उनसे अधिक मुफ्त सुविधाएं देंगे। अब प्रश्न यह हे की विभिन्न राजनेतिक दलो द्वारा दी जाने वाली मुफ्त बिजली, पानी, ग्रहिणियो को प्रतिमाह हजारो रूपयो की मदद, मुफ्त लैपटॉप, धर्मस्थलो की मुफ्त यात्रा अनेक ऐसी घोषणाएं जो मतदाताओ को लुभाती हे क्या वे कदाचरण में नही आती ? क्या चुनाव आयोग में ऐसी कोई व्यवस्था या नियम कायदे नही हे जो जनता को भ्रम में डालने वाली या लोभ देने वाली घोषणाओ पर रोक लगा सके। पहले कर्जमाफी और सब्सिडी देने की घोषणा की प्रथा थी तो अब जनता को मुफ्त का लालच दिया जा रहा हे। क्या ये घोषणाएं जनता को स्वाभिमान से जीना सिखाती हे। यह जनता को मुफ्त लालच देकर अकर्मण्य बनाने का प्रयास नही हे। एक तरफ तो सरकार लोगो को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करती हे दूसरी तरफ उसे हर चीज मुफ्त में देने का लालच दिया जा रहा हे। इन सबके लिए पैसा आएगा कन्हा से क्योंकि देश की आबादी के मुकाबले करदाताओं की संख्या तो कम ही हे। इसके बजाए सामान्य दरो पर सुविधाएं उपलब्ध करवाने का वादा ये राजनीतिक दल करे तो बात समझ में आती हे किंतु ऐसा हो नही रहा हे। क्या चुनाव केवल राजनीतिक दलो की मोज मस्ती की सुविधाएं उपलब्ध करवाने की सुविधा देने के लिए करवाए जा रहे हे या इसमे जनकल्याण की भी कोई भावना हे। सरकारो को यह भी देखना चाहिए की जिन लोगो से टैक्स लिया जा रहा हे उसे क्या मिल रहा हे ? क्या उसके द्वारा दिए जा रहे टैक्स का उपयोग सही कामो में हो रहा हे ? क्या करदाताओ को वह सुविधाएं और सम्मान मिल रहा हे जिसका वह हकदार हे ? अगर ऐसा नही हे तो वह कर चुकाने से बचना चाहेगा फिर सरकार विकास कार्यों के लिए धन कन्हा से लाएगी। देश में या प्रदेश में किसी भी दल की सरकार चुनी जाए उसका उद्देश्य जनकल्याण और जनता को न्यूनतम लागत पर सुविधाएं उपलब्ध करवाना होना चाहिए न की जनता को मुफ्तखोर बनाना। गरीबो को राशन, स्वास्थ्य सुविधाएं, आवास व शिक्षा मुफ्त हो तो बात समझ में आती हे क्युकी यह जीवन जीने के लिए आवश्यक हे। मुफ्तखोरी के कारण हम कई देशो को बर्बाद होते हुवे देखा हे। मुफ्तखोरी की यह सियासत देश की अर्थव्यवस्था को दीमक की तरह खोखला करने का काम ही कर रही हे। भारत का संविधान लोक कल्याण की अवधारणा पर आधारित हे। उपभोग की वस्तु मुफ्त में बांटना देश को गर्त में ले जाना हे। यदि सरकारे व राजनेतिक दल प्रभावी आर्थिक नीतियां बनाए जिसमे भ्रष्टचार की संभावना न हो एवम लाभार्थियों तक सही तरीके से इसकी पंहुच सुनिश्चित की जाए तो इस प्रकार की मुफ्त घोषणाओं की आवश्यकता नही रहेगी। जनता भी राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन कर देशहित में सही चुनाव कर के राजनेतिक दलो को इस तरह की मुफ्तखोरी की राजनीति को अधिक प्रभावी तरीके से हतोत्साहित कर सकती है।

पत्र संपादक के नाम
संपादक की सहमति आवश्यक नहीं

गौरव सोनी, मंदसौर

राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, आमजन सामान्य प्रेक्षको से उनके मोबाइल नंबर पर कर सकते हैं संपर्क

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। विधानसभा निर्वाचन के अंतर्गत सुवासरा एवं गरोठ विधानसभा क्षेत्र के लिए सामान्य प्रेक्षक श्री अशोक वामन ककडे को निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त किया गया है। इनके मोबाइल नंबर 8989046711 हैं। प्रेक्षक के मोबाइल नंबर प्रदान किए गए है। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, आम जन इन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। सामान्य प्रेक्षक का ईमेल genralobservermandsaur02@gmail.com यह है।

विधानसभा निर्वाचन के अंतर्गत मंदसौर एवं मल्हारगढ के सामान्य प्रेक्षक श्री ऋग्वेद मिलिंद ठाकुर को निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त किया गया है। इनके मोबाइल नंबर 8989038849 हैं। प्रेक्षक के मोबाइल नंबर प्रदान किए गए है। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, आम जन इन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। सामान्य प्रेक्षक का ईमेल genralobserver mandsaur 01@gmail.com यह है। प्रेक्षक श्री ठाकुर मंदसौर सर्किट हाउस में रुके हुए हैं। मंदसौर सर्किट हाउस में कोई भी सुबह 9 बजे से 10 बजे तक मिल सकता है।

विधानसभा निर्वाचन के अंतर्गत मंदसौर एवं मल्हारगढ के व्यय प्रेक्षक श्री गोपाल कृष्णपति को निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त किया गया है। इनके मोबाइल नंबर 8989773500 हैं। प्रेक्षक के मोबाइल नंबर प्रदान किए गए है। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, आम जन इन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। सामान्य प्रेक्षक का ईमेल expenditure mandsaur@ gamil.com यह है। विधानसभा निर्वाचन के अंतर्गत सुवासरा एवं गरोठ के व्यहय प्रेक्षक श्री प्रमोद कुमार श्योरान को निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त किया गया है। इनके मोबाइल नंबर 8989536500 हैं। प्रेक्षक के मोबाइल नंबर प्रदान किए गए है। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, आम जन इन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। सामान्य प्रेक्षक का ईमेल expenditure suwasara @gmail.com यह है।

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	349	1760	2520
उडद	82	7499	10699
सोयाबीन	11000	4300	4900
गैहु	3500	2000	3121
चना	214	5146	5880
मसुर	325	5100	6250
धनिया	400	5800	7000
लहसुन	13500	6000	17000
मैथी	800	5681	6951
अलसी	1971	4650	5116
सरसो	441	5081	5281
तारामीरा	2	4840	4881
इसबगोल	43	12440	19500
प्याज	7200	1500	4000
कलोंजी	37	11320	16220
डॉलर	5	8800	14600
तिल्ली	3	15640	15800
मटरसुखी	17	2000	3601
असालीया	26	8585	10200

कांग्रेस उम्मीदवार जैन का दौरा कार्यक्रम

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर विधानसभा के कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार श्री विपिन जैन 01 नवंबर 2023 बुधवार को मंदसौर शहर में प्रातः 8 बजे वार्ड क्रमांक 23,24,25 अंबावाड़ी शहर किला रोड के पास से जनसंपर्क प्रारंभ करेंगे। उसके पश्चात दोपहर 12 बजे से 2 बजे के बीच कृषि उपज मंडी में जनसंपर्क करेंगे। श्री विपिन जैन दोपहर मंदसौर ग्रामीण ब्लॉक के विभिन्न ग्रामों में जनसंपर्क करेंगें। गांव सिंदपन शाम 4:30 बजे, गुराडिया दीदा शाम 5 बजे, गागाखेड़ी शाम 6 बजे, गुडभेली शाम 6:30 बजे, धारियाखेडी शाम 7 बजे रलायता रात्रि 8 बजे ग्रामों में पहुंचकर मतदाताओं का आशीर्वाद लेकर जनसंपर्क करेंगे। श्री जैन के साथ पूर्व विधायक नवकृष्ण पाटिल, पूर्व विधानसभा प्रत्याशी महेंद्र सिंह गुर्जर, जिला पंचायत सदस्य दीपक सिंह गुर्जर, मंदसौर शहर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष राघवेंद्र सिंह तोमर, कार्यवाहक ब्लॉक अध्यक्ष अंबालाल हिंगोरिया, सलीम खान मंदसौर ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष विकास दसोरा, कार्यवाहक ब्लॉक अध्यक्ष घनश्याम कुमावत व कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता साथ रहेंगे। यह जानकारी जिला कांग्रेस प्रवक्ता राजनारायण लाड ने दी।

मंत्री देवड़ा के ओएसडी को हटाया

सत्रह दिन में दूसरी बार बदलाव, आबकारी आयुक्त कार्यालय ग्वालियर में की गई पोस्टिंग

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। राज्य शासन ने वित्त और आबकारी विभाग के मंत्री जगदीश देवड़ा के ओएसडी के रूप में पदस्थ रहे अपर आबकारी आयुक्त की पदस्थापना 17 दिन में दूसरी बार बदल दी है। श्री देवड़ा के यहां पदस्थ रहे अपर आबकारी आयुक्त राजेश हेनरी को वाणिज्यिक कर विभाग द्वारा राज्य स्तरीय उड़न दस्ता से हटाकर आबकारी आयुक्त ग्वालियर पदस्थ किया गया है। वाणिज्यिक कर विभाग के अंतर्गत आबकारी विभाग में पदस्थ अपर आबकारी आयुक्त राजेश हेनरी की सेवाएं जगदीश देवड़ा के वित्त मंत्री बनने के बाद उनकी निजी स्थापना में ओएसडी के रूप में थी। 9 अक्टूबर को चुनाव आचार संहिता लागू होने के बाद हेनरी को 11 अक्टूबर को जारी आदेश में राज्य स्तरीय उड़न दस्ता भोपाल में पदस्थ करने के आदेश वाणिज्यिक कर विभाग द्वारा जारी किए गए थे। हेनरी को चुनाव आचार संहिता लागू होने के दो दिन बाद वित्त मंत्री देवड़ा के निजी स्थापना से हटाते हुए वापस आबकारी विभाग में पदस्थ किया गया था। हेनरी 11 अगस्त 2020 से वित्त मंत्री के निजी स्थापना में विशेष कर्तव्य अधिकारी के रूप में पदस्थ थे।

शिकायतों के बाद बदलाव...

वित्त मंत्री देवड़ा के स्टाफ में रहे हेनरी को आचार संहिता लागू होने के बाद राज्य स्तरीय उड़नदस्ता में शामिल किए जाने पर प्रदेश में अवैध शराब के परिवहन और कारोबार के मामले में की जाने वाली कार्रवाई को लेकर शिकायत आने लगी थी। इसे देखते हुए शासन ने हेनरी को उड़नदस्ता से हटाकर आबकारी मुख्यालय ग्वालियर स्थित आबकारी आयुक्त कार्यालय में पदस्थ कर दिया। उनके स्थान पर आबकारी आयुक्त ग्वालियर कैंप भोपाल में पदस्थ अपर आबकारी आयुक्त वीरेंद्र सक्सेना को राज्य स्तरीय उड़न दस्ता में पदस्थ किया गया है।

दो आरोपी जिला बदर

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्री दिनेश जैन द्वारा म.प्र.राज्य सुरक्षा अधिनियम-1990 के तहत आरोपी रवि पिता रंगलाल रावत निवासी जुनासाथ मनासा थाना मनासा को छह माह की अवधि के लिए जिला बदर करने का आदेश जारी किया गया है। इसी तरह आरोपी मुकेश पिता मस्तोना नाथ निवासी नई आबादी नयागांव थाना जावद को छह माह की अवधि के लिए जिला बदर करने का आदेश जारी किया गया है।

आरोपी दोनो आरोपी जिला बदर अवधि में नीमच जिले की राजस्वश सीमा तथा समीपवर्ती मंदसौर, रतलाम, शाजापुर, उज्जैन, देवास एवं आगर-मालवा जिले की राजस्व सीमा में जिला बदर अवधि में प्रवेश नहीं कर सकेगा।

गुलाबी-सफेद रंग में प्रत्याशी नहीं छपवा सकेंगे डमी पत्र

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। विधानसभा चुनाव में मतदाताओं को जानकारी देने के लिए राजनैतिक दल या उम्मीदवार ईवीएम की डमी बैलेट यूनिट तैयार कर सकते हैं। डमी मत पत्र को भी भूरा, पीला या धूसर रंग में छपवा सकते हैं। लेकिन, चुनाव आयोग ने अपने निर्देश में स्पष्ट किया है कि सफेद या गुलाबी रंग में डमी मत पत्र नहीं छपवा सकते हैं।

आयोग के निर्देशानुसार वोटर्स को शिक्षित करने के उद्देश्य से डमी बैलेट यूनिटों को तैयार करने पर कोई आपत्ति नहीं है। ऐसी डमी बैलेट यूनिट लकड़ी, प्लास्टिक या प्लाई बोर्ड बाक्स की हो सकती है, लेकिन इसका आकार शासकीय बैलेट यूनिट के आकार का आधा होना चाहिए। इसे पीला, धूसर या भूरा रंग का होना चाहिए। डमी बैलेट यूनिटों में मतपत्र की तरह अभ्यर्थी का क्रम संख्या, नाम एवं प्रतीक चिन्ह को दिखाने की व्यवस्था भी हो सकती है। इसमें बैटरी चलित बटन या लैंप भी हो सकता है जो दबाने पर जलेगा।

वास्तविक मतपत्र की साइज नहीं हो...

निर्वाचन आयोग के निर्देशों के मुताबिक डमी मतपत्र का आकार भी वास्तविक मतपत्र के जैसा नहीं होना चाहिए। चुनाव लड़ रहे उम्मीदवार प्रचार अभियान में इस्तेमाल के लिए डमी मतपत्र भी छपवा सकते है। लेकिन, इसका रंग और आकार वास्तविक मतपत्रों के सदृश्य नहीं होना चाहिए। ऐसे डमी मतपत्रों पर उम्मीदवार उस स्थान पर जहां वे वास्तविक मतपत्र में उपस्थित होंगे। उसको दर्शाते हुए अपने नाम एवं प्रतीक का उपयोग किया जा सकेगा। लेकिन, इनमें उस निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे दूसरे उम्मीदवारों का नाम या प्रतीक नहीं होना चाहिए। आयोग ने स्पष्ट किया है कि चुनाव लड रहे राजनैतिक दल अथवा उम्मीदवार यदि मतदाताओं की सुविधा के लिए उन्हें मतदाता पर्ची जारी करते हैं तो ऐसी पर्चियों में उम्मीदवार का नाम या उसके राजनैतिक दल का नाम एवं चुनाव चिन्ह नहीं होना चाहिए।

117 मतदान केन्द्रों पर आवश्यक कार्य पूर्ण

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव के दिशा निर्देशों के अनुसार सीएमओ श्री सुधीर कुमार सिंह के मार्गदर्शन में नपा के अधिकारीगण-कर्मचारीगणों ने मंदसौर नगर के 117 मतदान केन्द्रों पर आवश्यक कार्य पूर्ण करा लिये हा। मतदान केन्द्रों पर आने वाले मतदाताओं को परेशानी न हो इसके लिये सभी मतदान केंद्रों पर रैम्प, मतदान केन्द्रों की रिपोर्टिंग, भवनों की रंगाई पुताई एवं मतदान केन्द्र के बाहर दीवार लेखन का कार्य आवश्यकता के अनुसार पूर्ण किया गया। मंदसौर नगर के सभी मतदान केंद्रों पर सभी आवश्यक व्यवस्थायें मंदसौर नपा के द्वारा पूर्ण कर ली गई है।

आत्महत्या के लिए पटरी के बीच में लेटा

14 डिब्बे ऊपर से निकल गए फिर भी सलामत रहा, मालगाड़ी रुकी तो भागा

पिपलियामंडी, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। आत्महत्या के प्रयास में मालगाड़ी के आने से पहले पटरी के बीच में लेटे युवक को बचाने के लिए इंजन ड्राइवर ने मालगाड़ी को रोकना चाहा, लेकिन उसके ऊपर होकर मालगाड़ी के 14 डिब्बे निकल गए, मालगाड़ी रुकी और इंजन चालक नीचे उतरा और देखा तो युवक उठकर भागता हुआ नजर आया। इस दौरान करीब 15 मिनिट तक मालगाड़ी खड़ी रही और रेलवे फाटक बन्द रही, चूंकि ओवरब्रिज पर आवागमन चालू होने से कई वाहन चालक ब्रिज से होकर निकले। मौके पर आत्महत्या का प्रयास करने वाले युवक का बेग व मोबाइल मिला, जिसे इंजन चालक ने पिपलिया रेलवे स्टेशन पर तैनात स्टेशन मास्टर को सुपुर्द किया। जानकारी के अनुसार मंगलवार को दोपहर 3 बजे करीब मंदसौर से नीमच की ओर जा रही मालगाड़ी के आने से पूर्व एक युवक (रेलवे फाटक से मंदसौर की ओर 600 मीटर दूरी पर) पटरी के बीच लेट गया। इंजन चालक ने युवक को बचाने के लिए इंजन को धीमा किया, फिर भी करीब 14 डिब्बे उसके ऊपर होकर निकल गए। इंजन ड्राइवर नीचे उतरा और देखा तो एक युवक मालगाड़ी के नीचे से निकलकर भागता हुआ नजर आया। हालांकि उसका एक बेग व मोबाइल वहीं पर छूट गया, जिसे ड्राइवर ने पिपलिया स्टेशन मास्टर को सुपुर्द किया। स्टेशन अधीक्षक ने सूचना पिपलिया पुलिस चौकी पर देकर मोबाइल व आईडी कार्ड सुपुर्द किया। बताया गया युवक आईटीआई कर रहा है व आत्महत्या करने से पूर्व वह किसी लड़की से मोबाइल पर बात कर रहा था। पिपलिया चोकी प्रभारी अभिषेक बोरासी ने बताया बेग में मिले दस्तावेज व मोबाइल से युवक की शिनाख्त नाहरगढ थाना क्षेत्र के जगदीश के रूप में हुई, जिसे पकडकर उसके पिता को बुलाकर सुपुर्द कर दिया।

एक माह पूर्व रात्रि 2 बजे नही खिलाया था खाना...

रंजिश के चलते ढाबा संचालक का अपहरण कर पीटा, 3 पर केस दर्ज

पिपलियामंडी, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। ढाबे पर रात्रि में खाना खिलाने से मना किया तो रंजिश में चार युवकों ने ढाबा संचालक को पीटा व वाहन में डालकर खंखराई के जंगल में छोड़ा। पिपलिया निवासी सुनील केथवास ने मल्हारगढ़ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि वह 30 अक्टूबर को मल्हारगढ़ से पिपलिया आ रहा था। इसी दौरान दोपहर 3 बजे सज्जन ढाबे के सामने बोलेरो में सवार होकर आए वीरम बावरी, संजय बावरी, पवन एवं एक अन्य व्यक्ति ने मुझे रोका, मेरे साथ मारपीट की और बोला कि उस दिन रात में तूने हमें खाना देने से क्यों मना किया था, कहकर गाली-गलौज की व लोहे की राड से पीटा। बाद में मुझे बोलेरा वाहन में डालकर खंखराई के जंगल में ले जाकर पीटा व छोड़ दिया। सुनील ने मल्हारगढ़ थाने पर पहुंच शिकायत में बताया कि करीब एक माह पूर्व संजय पिता विरमलाल बावरी रात्रि 2 बजे ओवरब्रिज के पास स्थित मेरे ढाबे पर खाना खाने आए थे। मैंने मना कर दिया तो मुझसे रंजिशवश मेरी पिटाई की व अपहरण कर ले गए। पुलिस ने 3 आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

सामान्य प्रेक्षक ठाकुर ने किया एमसीएमसी कक्ष एवं निर्वाचन कंट्रोल रूम का निरीक्षण

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। विधानसभा निर्वाचन के अंतर्गत मंदसौर एवं मल्हारगढ़ के सामान्य प्रेक्षक श्री ऋवेद मिलिंद ठाकुर ने जिला पंचायत स्थित एमसीएमसी कक्ष एवं निर्वाचन कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान एमसीएमसी नोडल डॉ ईश्वरलाल चौहान, सहायक नोडल व्यय लेखा श्री विजय नरेटी एवं श्री रोनक दुबे, आईटी कम्युनिकेशन श्री वैभव बैरागी उपस्थित थे। सामान्यी प्रेक्षक श्री ठाकुर ने सभी कर्मचारी जिसकी ड्यूटी पेड न्यूज कार्य में लगी है। समय-समय पर आकर अपनी ड्यूटी का निर्वहन करें और किसी प्रकार की पैड न्यूज़ / विज्ञापन या बिना प्रमाणीकरण के कोई विज्ञापन चलता है तो उसकी सूचना तुरंत एमसीएमसी समिति को प्रदान करें। टीव्ही पर प्रसारित प्रत्येक खबर/ विज्ञापन पर कड़ी निगरानी रखे। टीवी, पेपर कटिंग, सोशल मीडिया एवं रेडियों निगरानी में लगे कर्मचारियों से चर्चा की।

एमसीएमसी नोडल डा. चौहान द्वारा बताया गया कि मीडिया मानीटरिंग और सर्टिफिकेशन कमेटी एम.सी.एम.सी कक्ष जिला पंचायत कार्यालय में 24 घण्टे कार्य कर रहा है। एम.सी.एम.सी कक्ष में 28 अधिकारी-कर्मचारी कार्यरत है। इसमें केबल नेटवर्क सहित 3 टी.व्ही. चैनलों की 24 घण्टे मानीटरिंग की जा रही है। प्रति दिन की रिपोर्ट जिला निर्वाचन अधिकारी को भेजी जा रही है। एम.सी.एम.सी कक्ष में समाचार पत्र-पत्रिकाओं की भी मानीटरिंग कर पेड न्यूज संबंधी समाचारों और विज्ञापनों का संकलन एवं अभ्यंर्थी के सोशल मीडिया अकाउंट की निगरानी भी की जा रही है। प्रेक्षक ने आईटी कम्युननिकेशन कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया। सामान्य प्रेक्षक श्री ऋवेद मिलिंद ठाकुर ने ई दक्ष केंद्र मंदसौर में आईटी कम्युनिकेशन कंट्रेल रूम का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कम्युनिकेशन प्लान, पोलिंग स्टेशन एएमएफ, सीसीटीवी एवं वेबकास्टिंग से संबंधित जानकारी ली गई।

प्रेक्षक ने ईवीएम स्ट्रां ग रूम का निरीक्षण किया–सामान्य प्रेक्षक श्री ऋवेद मिलिंद ठाकुर ने पीजी कॉलेज में ईवीएम स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अधिकारी कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए श्र उन्होंने कहा कि सीसीटीवी कैमरे 24 घंटे चालू रहने चाहिए।

दिलाई राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव द्वारा सुशासन भवन मंदसौर में अधिकारी एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। शपथ में सभी अधिकारियों-कर्मचारियों ने राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करने और अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प लिया।

आरोपी को थाना हाजरी का आदेश

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। जिला मजिस्ट्रेट नीमच श्री दिनेश जैन व्दारा राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 के तहत अनावेदक शोएब अगवान पिता मो.असलम निवासी रिसाला मस्जिद के पास नीमच थाना नीमच केंट को सदाचार बनाये रखने के लिए 3 माह तक सप्तृह में एक दिन (थाना प्रभारी व्दोारा निश्चित दिन) थाना हाजरी का आदेश जारी किया गया है। इसी तरह अनावेदक पुरूषोत्तनम पिता नारायणदास बैरागी निवासी मस्तानपुरा डीकेन थाना रतनगढ को सदाचार बनाये रखने के लिए 3 माह तक सप्ताह में एक दिन (थाना प्रभारी व्दारा निश्चित दिन) थाना हाजरी का आदेश जारी किया गया है।

सभी अधिकारी-कर्मचारी सतर्कता, सजगता के साथ तत्परतापूर्वक निर्वाचन दायित्वों का निर्वहन करें-प्रेक्षक जावले

प्रेक्षकों ने नीमच में की विधानसभा निर्वाचन तैयारियों की समीक्षा

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। स्वतंत्र, निष्पक्ष, शांतिपूर्ण, सुव्यवस्थित निर्वाचन सम्पन्न कराने के लिए सभी अधिकारी, कर्मचारी पूरी सतर्कता, सजगकता के साथ तत्परतापूर्वक अपने दायित्वों का निवर्हन करें। यह बात भारत निर्वाचन आयोग के जनरल आब्जर्वर श्री किशन नारायणराव जावले ने मंगलवार को कलेक्टोरेट सभाकक्ष नीमच में जिले के सभी आर.ओ., ए.आर.ओ. एवं नोडल अधिकारियों की बैठक में विधानसभा निर्वाचन 2023 की तैयारियों की विस्तार से समीक्षा के दौरान दिए। बैठक में जनरल आर्ब्जवर श्रीमती जे.विजयारानी, कलेक्टर दिनेश जैन, एसपी अमित कुमार तोलानी, एडीएम सुश्री नेहा मीना, जिला पंचायत सीईओ गुरूप्रसाद, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नवलसिह सिसोदिया सहित सभी आर.ओ. एवं जिला नोडल अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में आर्ब्जवर श्रीमती जे.विजयारानी ने कहा कि स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं सुव्यवस्थित मतदान प्रक्रिया सम्पन्न कराने में सभी अधिकारी-कर्मचारियों की सक्रीय भागीदार रहे। आयोग के निर्देशों का जिला स्तर से लगाकर, मैदानी स्तर(ग्राम स्तर) तक पालन सुनिश्चित हो। बैठक में प्रेक्षकगणों ने पावर प्रजेंटेशन के माध्यम से मतदाताओं की संख्या, जेण्डर रेश्यो, ई.पी.रैश्यो, मतदान केंद्र वाईज मतदाताओं की संख्या, मतदान केंद्रों की संख्या, क्रिटीकल मतदान केंद्रों की संख्या, वर्ल्नेबर पकिट, विशेष मतदान केंद्रों, दिव्यांग मतदान केंद्रों, महिला मतदान केंद्र, यूथ मतदान केंद्र एवं मॉडल मतदान केंद्रों की संख्या, रूट एवं सेक्टर की संख्या, वाहनों की व्यवस्था, मानव संसाधन की व्यवस्था, मतदान केंद्रों पर ए.एम.एफ. की उपलब्धता, विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि के संबंध में विस्तार से समीक्षा की। कलेक्टर श्री दिनेश जैन ने जिले में विधानसभा निर्वाचन की अब तक की तैयारियों के बारे में विस्तार से अवगत कराया तथा भविष्य की जाने वाली गतिविधियों के बारे में भी बताया। पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार तोलानी ने पुलिस बल की व्यवस्था, केंद्रीय सुरक्षा बलों की उपलब्धता एवं अब तक की गई जप्ती की कार्यवाही, आपराधिक तत्वों के विरूद्ध की गई कार्यवाही आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

प्रेक्षक श्री जावले व श्रीमती विजयारानी प्रात: 9 से 11 बजे तक आमजनों से भेंट करेंगे–भारत निर्वाचन आयोग के जनरल आर्ब्जवर श्री किशन नारायरण राव जावले एवं श्रीमती जे.विजयारानी का नीमच आगमन हो चुका है। प्रेक्षक श्री जावले का मोबाईल नम्बर 6268020690 एवं श्रीमती जे.विजयारानी का मोबाईल नम्बर 6260330624 है। प्रेक्षकगण श्री जावले एवं श्रीमती जे.विजयारानी, सुखानन्दा विश्राम गृह खोर में प्रात: 9 बजे से 11 बजे तक आमजनों व आंगतुकों से मुलाकात के लिए उपलब्ध रहेंगे।

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस आज मनाएंगे

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। अपर कलेक्टर श्री विशाल सिंह चौहान द्वारा बताया गया कि 1 नवम्बयर को म.प्र. स्थापना दिवस मनाया जायेगा। म.प्र. स्थापना दिवस पर कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव प्रात: 9 बजे ध्वजारोहण करेंगे। ध्वजारोहण पश्चांत राष्ट्रगान होगा और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाएगें।

निर्वाचन दायित्वों के निवर्हन में उदासीनता बरतने पर आरटीओ को कारण बताओं नोटिस जारी

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिनेश जैन व्दारा जिला परिवहन अधिकारी श्री एन.एल.गामड को निर्वाचन संबंधी समीक्षा बैठक में उपस्थित नहीं होने और कार्यालय के अन्य कर्मचारी को बैठक में भेजने पर कारण बताओं सूचना पत्र जारी किया गया है। कारण बताओ सूचना पत्र के माध्यम से सूचित किया है, कि विधानसभा निर्वाचन, 2023 के अन्तर्गत पोस्टल बैलेट से मतदान संबंधी समीक्षा के संबंध में बैठक आयोजित की गई थी, जिसकी सूचना के उपरांत भी परिवहन अधिकारी नियत तिथि एवं समय पर समीक्षा बैठक में उपस्थित नहीं हुए तथा अपने स्थान पर कार्यालय के अन्य कर्मचारी, जिनके पास पोस्टल बैलेट के संबंध में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं थी, को बैठक में उपस्थित होने के लिए निर्देशित कर दिया गया। समीक्षा के दौरान पाया गया निर्वाचन के दौरान उपयोग किये जाने वाले निजी वाहनों के चालक, परिचालक को पोस्टल बैलेट जारी किये जाने के संबंध में परिवहन अधिकारी द्वारा अब तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है, जबकि परिवहन विभाग के पोस्टल बैलेट हेतु उन्हें नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

जिला परिवहन अधिकारी श्री गामड का उक्त कृत्य, निर्वाचन कर्तव्यों के निर्वहन में घोर लापरवाही एवं लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा-32 के अन्तर्गत पदीय कर्तव्यों का भंग की श्रेणी में आता है। उक्त कृत्य के संबंध में क्यों न उनके विरूद्ध योग्य वैधानिक कार्यवाही की जावे ? इस संबंध में आर.टी.ओ. को अपना स्पष्टीकरण कारण बताओ सूचना-पत्र की प्राप्ति से 03 दिवस की समयसीमा में समक्ष में उपस्थित होकर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए है।

रंगोली प्रतियोगिता के माध्यम से किया जा रहा मतदाताओं को जागरूक

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। विधानसभा निर्वाचन 2023 के अंतर्गत स्वीटप गतिविधियों के तहत जिले में मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसके लिये महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वाधान में मतदाता जागरूकता के कार्यक्रम लगातार आयोजित किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत गांव गांव में मतदाताओं को जागरूक करने के लिए रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। महिलाएं रंगोली बनाकर संदेश के रूप में हम सब वोट करेंगे, वोट देंगे। इस प्रकार के संदेश भी लिख रही है। यह कार्य महिला बाल विकास विभाग के माध्यम से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के द्वारा किया जा रहा है। इस कार्य में मतदाताओं के द्वारा भी विशेष रूचि ली जा रही है। साथ ही सभी लोग आपस में जागृत हो रही रहे हैं, और अन्य लोगों को भी जागरूक कर रहे हैं।

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम सम्पन्न

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। जिले में विधानसभा निर्वाचन 2023 के तहत मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत मध्यप्रदेश जनअभियान परिषद की नवा अंकुर संस्था परामर्शदाता एव ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियों के सहयोग से गांव सुवासरा बुजुर्ग एवं पालड़ी में ग्रामीणों को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलवाई गई एवं निष्पक्ष रूप से नैतिक मतदान करने की अपील की गई

भाजपा प्रत्याशी सिसौदिया आज विभिन्न ग्रामों का दौरा करेंगे

मंदसौर, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी यशपालसिंह सिसोदिया आज 1 नवम्बर को मंदसौर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों में जनसम्पर्क करेंगे। श्री सिसोदिया प्रात: 8.30 बजे आक्या, 9.30 बजे उमाहेडा, 10 बजे सरसोद, 11 बजे निम्बोद, 12 खजुरिया सारंग, 1 बजे खोडाना, 2.30 बजे पलासिया, 3 बजे गुराडिया शाह, 3.30 बजे लसुडिया इला, 4 बजे कचनारा, 5 बजे नगरी पहुंचकर मतदाताओं से जनसम्पर्क करेंगे। दौरे में वरिष्ठ भाजपा नेता, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भी साथ रहेंगे।

कैसी मनेगी लाड़ली बहना... पेज 1 से जारी

लाडली बहनों के खाते में 1596 करोड़ रुपए ट्रांसफर किए जाते हैं। योजना के तहत राज्य सरकार हर एक लाभार्थी महिला को हर महीने 1,250 रुपए दे रही है। इधर, निर्वाचन आयोग के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि उनके पास फिलहाल कोई प्रस्ताव नहीं आया है। प्रस्ताव आने पर ही कोई फैसला लिया जाएगा।

✻ अंतिम यात्रा ✻

स्वर्गीय श्री सुजानमल जी अग्रवाल के सुपुत्र महावीरप्रकाश, आनंदप्रकाश व नरेंद्र कुमार के भाई व अंकुश (जिम्मी) के पिताजी तथा शेलेंद्र, रवि के अंकल तथा हिरांश के दादाजी श्री कृष्णप्रकाश जी अग्रवाल (पत्रकार) का स्वर्गवास दिनांक 31/10/2023 को हो गया है। जिनकी अंतिम यात्रा 1 नवंबर 2023 को प्रात: 9 बजे निवास स्थान महू नीमच रोड स्टेट बैंक के पास मल्हारगढ से निकलेगी।

✻✻✻ शोकाकुल ✻✻✻
महावीर प्रकाश अग्रवाल पत्रकार,
आनंद प्रकाश अग्रवाल एडवोकेट,
नरेंद्र अग्रवाल पत्रकार
(मित्तल परिवार)

विश्व मानसिक स्वास्थ्य माह का समापन आज

नीमच, 31 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। विश्व मानसिक स्वास्थ्य माह (अक्टूबर) के अंतर्गत नीमच जिले में जारी कार्यक्रमों का आज एक नवम्बर 2023 को रेडक्रॉस हॉल में आयोजित मानसिक स्वास्थ जागरूकता कार्यक्रम एवं नि:शुल्क शिविर के साथ समापन होगा। मनकक्ष मानसिक रोग विभाग, जिला चिकित्सालय की निगरानी में मानसिक स्वास्थ्य समस्या स्क्रीनिंग, उपचार और जागरूकता शिविर पूरे अक्टूबर माह में सिविल अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में आयोजित किये गए। विश्व मानसिक स्वास्थ्य माह का शुभारंभ 10 अक्टूबर 2023 मंगलवार से नीमच के सिंगोली, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से किया गया था। एक नवम्बटर 2023 को जिला अस्पताल में सिविल सर्जन डॉ.महेंद्र पाटिल के निर्देशन में कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में अस्पताल की मातृत्व इकाई में माताओं के मानसिक स्वाथ्य पर चर्चा की जायेगी, जिसमें प्रसव पूर्व और और प्रसवोत्तर मानसिक स्वास्थ्य के पक्षों पर प्रकाश डाला जायेगा। साथ ही सभी मरीजो की मानसिक रोग के लिये स्क्रीनिंग की जायेगी।

रेडक्रॉस हॉल में आयोजित मानसिक स्वास्थ्य शिविर में मानसिक व नशा संबंधी समस्याओं और तनाव व आत्महत्या जैसी समस्याओं की स्क्रीनिंग कर पीड़ितों को उपचार व मनोवैज्ञानिक परामर्श दिया जायेगा। साथ ही मानसिक समस्याग्रस्त लोगों की देख भाल करने वालों का भी उन्मुखीकरण किया जायेगा व मानसिक स्वास्थ्य और टेलीमानस कार्यक्रम पर जागरूकता सत्र आयोजित किया जायेगा। जिला चिकित्सालय की मनकक्ष प्रभारी डॉ.स्वाति वाधवा ने बताया, कि प्रतिवर्ष 10 अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। जिसके लिए एक थीम निर्धारित की जाती है। इस वर्ष की थीम 'मानसिक स्वास्थ्य एक- सार्वभौमिक मानव अधिकार है'। उन्होंने सभी आशा कार्यकर्ता, सी.एच.ओ. व आमजनता से अपील करते हुए कहा, कि वे मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए ज्यादा से ज्यादा सहभागिता करते हुए कार्यक्रम में शामिल हो।

कार्यालय अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी मंदसौर (मप्र)

क्रमांक क्यू/23 मंदसौर, दिनांक 31.10.2023

विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ट्रेक्टर क्रमांक एमपी 45 एए 5743 जो कि परिवहन कार्यालय मंदसौर में राधेश्याम लोहार पिता भंवरलालजी लोहार निवासी बिल्लोद, तह. मल्हारगढ़, जिला मंदसौर के नाम से पंजीकृत है।

यह सूचित किया जाता है कि वाहन स्वामी की मृत्यु दिनांक 15.07.2018 को हो चुकी है इसलिए उक्त ट्रेक्टर का अंतरण अपने नाम से करने हेतु उनकी पत्नी श्रीमती कौशल्याबाई पति राधेश्याम लोहार निवासी बिल्लोद, तह. मल्हारगढ़, जिला मंदसौर ने इस कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत किया है। इस संबंध में जिस व्यक्ति को आपत्ति हो वह विज्ञप्ति प्रकाशन के सात दिवस के अंदर इस कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित अवधि के पश्चात प्रस्तुत किसी आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा। अंतरण आवेदक के नाम पर कर दिया जावेगा।

अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, मंदसौर

एजेंसी देना है

शामगढ़, मल्हारगढ़ व धुधड़का में

दैनिक **गुरु एक्सप्रेस**

की एक और एजेन्सी देना है। इच्छुक व्यक्ति दोपहर 2 से शाम 5 बजे तक संपर्क करें।

9425105927, 28 -07422-495831

कार्यालय दैनिक गुरु एक्सप्रेस

15, नपा मार्केट, नयापुरा रोड़, मंदसौर

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीड्यिा एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है।
फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in